सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
YouTube
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 46, नई दिल्ली । रविवार, 28 अप्रैल 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जो लोग गिरने से डरते हैं
वह कभी भी जीवन में
उड़ान नहीं भर सकते।

03 सुनीता केजरीवाल ने किया रोड शो, बोलीं- इस देश को बचा लीजिए...
06 शेषन ने बदली थी अराजक चुनावों की तस्वीर
08 सीबीआई जांच में संदेशखाली में ई-रिक्शा चालक के घर से मिले विदेशी हथियार

## रेलवे दौड़ाएगा अब वंदे मेट्रो, दैनिक यात्रियों को होगा फायदा, जानिए कितनी होगी रफ्तार

संजय बांटला

वंदे मेट्रो 110-130 किमी की रफ्तार से चलेगी। 200 किमी के दायरे में आने वाले शहरों के यात्रियों को तेज रफ्तार ट्रेन से सफर कराने की योजना है। अगले 10 दिनों में ट्रायल शुरू हो जाएगा।

**नई दिल्ली।** रेलवे अपने दैनिक यात्रियों को मेट्रो जैसे सफर का अहसास कराने की तैयारी कर रहा है। इसके लिए वंदेभारत ट्रेन की तर्ज पर वातानुकूलित वंदे मेट्रो ट्रेन चलाई जाएंगी। इससे 200 किलोमीटर के दायरे में आने वाले छोटे शहर दिल्ली, मुंबई सरीखे दस लाख से ज्यादा आबादी वाले बड़े शहरों से जुड़ जाएंगे। छोटे रूट पर भी रफ्तार 110-130 किलोमीटर प्रतिघंटे होगी। अगले 10 दिनों में इसका ट्रायल शुरू होगा। जुलाई तक इसे ट्रैक पर भी उतार दिया जाएगा।

रेल मंत्रालय के मुताबिक, वंदे मेट्रो ट्रेन देशभर के 124 शहर को जोड़ेगी। इसके एक कोच में 280 यात्री सफर कर सकेंगे। इसमें से 100 लोगों के बैठने के लिए सीटें होंगी, जबकि 180 यात्री मेट्रो की तरह कोच में खड़े रहेंगे। इसे स्मोक डिटेक्शन सिस्टम और कवच सिस्टम से भी इस ट्रेन को लैस किया गया है। जरूरत पड़ने पर यात्री टॉक बैक सिस्टम से लोको पायलट से भी बात कर सकेगा। योजना के केंद्र में 10 लाख आबादी वाले बड़े शहर हैं। इनके 200 किमी के दायरे में दैनिक यात्रियों की आवाजाही बेहतर करने की रेलवे की योजना है। वहीं, यूरोप में जिस तरह की ट्रेन होती है, उसी डिजाइन की वंदे मेट्रो होगी। दिल्ली मेट्रो की तरह साइड सीट बेंचनुमा, लेकिन आरामदायक होगी। पहले चरण में यह ट्रेन 12 कोच वाली होगी। 4, 8, 13, 16 कोच वाली ट्रेनें छोटे शहरों को कनेक्ट करेंगी। जल्द ही देशभर में वंदे मेट्रो दौड़ने लगेंगी। राजकोट-अहमदाबाद, चेन्नई-तिरुपति जैसे शहरों को एक-दूसरे से लिंक करने के साथ ही यह ट्रेनें हर राज्य की राजधानी से जोड़ेंगी।

**अगस्त से वंदेभारत स्लीपर भी चलेगी**

वंदे मेट्रो की तरह वंदेभारत स्लीपर कोच वाली ट्रेन भी जल्द ही पटरी पर उतरेगी। लंबी दूरी की यह ट्रेन अगले तीन महीने में चलाने की तैयारी है। यह ट्रेनें दिल्ली-मुंबई, दिल्ली-कोलकाता, दिल्ली-चेन्नई, दिल्ली-विशाखापत्तनम समेत अन्य रूट पर चलेंगी। आधुनिक सुविधाओं से लैस ट्रेनें आरामदायक यात्रा कराने में मददगार साबित होंगी। इसी तरह रेलवे वंदेभारत कुर्सीयान वाली ट्रेनों की संख्या बढ़ाने पर भी जोर दे रहा है।

**जल्द ही 50 अमृत भारत ट्रेन चलेंगी**

रेल मंत्रालय के अनुसार, स्लीपर श्रेणी वाली अमृत भारत ट्रेन अब नये कलेवर में दिखेगी। इसे और अधिक गति देने के लिए 6000 हॉर्स पॉवर वाले दो इंजन को जोड़कर चलाया जाएगा। जल्द ही 50 और इस तरह की ट्रेनें ट्रैक पर उतरेंगी। साथ ही, 400 अमृत भारत ट्रेन निर्माण की स्वीकृति दी गई है। लंबी दूरी वाली यह ट्रेनें ज्यादा ट्रैफिक वाले रूट पर भी अपनी गति से चलेंगी। ट्रेनें 22 कोच वाली होंगी जिनमें 11 स्लीपर और 11 अनारक्षित कोच होंगे। रेलवे ने पैसेंजर ट्रेन के लिए भी इंजन के मॉडल को आधुनिक करने के साथ ही नया रूप दिया है। 1980 से अभी तक निर्मित हो रहे टी-5 मॉडल को बदलकर जीटीबी इंजन तैयार किया गया है। बुलेट व वंदेभारत ट्रेन की शेप इस नए इंजन को दी गई है। चितरंजन लोकोमोटिव में इसे तैयार किया जा रहा है।

**दिल्ली-एनसीआर के लिए बेहद उपयोगी रहेगी वंदे मेट्रो**

वंदे मेट्रो जुलाई में ट्रैक पर आने से सबसे बड़ा फायदा दिल्ली-एनसीआर के शहरों को होगा। 200 किमी के दायरे में आने वाले सभी शहरों के दैनिक यात्री वातानुकूलित कोच में आसानी से दिल्ली पहुंच सकेंगे। उन्हें पहले से टिकट भी बुक नहीं करवाना पड़ेगा। मेट्रो की तरह काउंटर पर टिकट लेकर वंदे मेट्रो में सफर किया जा सकेगा। माना जा रहा है कि वंदे मेट्रो के कारण लोग निजी वाहन छोड़ देंगे। इससे सड़क पर वाहनों की संख्या कम होगी और प्रदूषण भी कम होगा। हालांकि, रेलवे ने अभी इसके किराये की घोषणा नहीं की है।

**इन ट्रैक के यात्रियों को लाभ**

दिल्ली-गुरुग्राम
दिल्ली-मेरठ
दिल्ली-रेवाड़ी
दिल्ली-फरीदाबाद-पलवल-मथुरा
दिल्ली-सोनीपत, पानीपत
दिल्ली-रोहतक

## सड़क सुरक्षा पाठशाला : "गर्मी के मौसम में पूर्ण पेट्रोल भराने से बचें"

डॉ अंकुर शरण

**नई दिल्ली।** गर्मियों के मौसम में वाहनों का इस्तेमाल बढ़ जाता है, और इसके साथ ही पेट्रोल पंपों पर भी भारी भीड़ होती है। इस मौसम में पूर्ण पेट्रोल भरने की प्रथा अपेक्षात सुरक्षित नहीं होती है। इस रिपोर्ट में हम इस विषय पर चर्चा करेंगे और लोगों को संज्ञान में लाने का प्रयास करेंगे कि गर्मियों के मौसम में पेट्रोल भराते समय सावधानी बरतें।

गर्मियों के मौसम में ध्यान देने वाली एक महत्वपूर्ण बात है कि पेट्रोल के बड़े टैंक में पूर्ण पेट्रोल भरने से उसमें गर्मी के कारण दबाव बढ़ जाता है, जिससे असुरक्षित स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। गर्मी के कारण पेट्रोल का वाष्पीकरण तेज हो जाता है, जिससे पेट्रोल के टैंक में दबाव बढ़ जाता है और इससे टैंक फट सकता है या अन्य हानिकारक संघर्ष उत्पन्न हो सकता है।

इस समस्या का समाधान करने के लिए लोगों को गर्मियों के मौसम में पेट्रोल के समापन स्तर को छोटे हिस्सों में भरने का सुझाव दिया जाता है। इससे पेट्रोल के टैंक में दबाव कम होगा और उसमें सुरक्षितता बनी रहेगी।

इस रिपोर्ट के माध्यम से हमने लोगों को गर्मियों के मौसम में पूर्ण पेट्रोल भराने से बचने की सलाह दी है। पेट्रोल के समापन स्तर को छोटे हिस्सों में भरने से टैंक में दबाव कम होगा और यात्रा के दौरान सुरक्षा की व्यवस्था बनी रहेगी। इसे अपनाकर लोग खुद को और अन्य यात्रीगणों को सुरक्षित रख सकते हैं।

## व्यस्त सड़क पर स्टंट कर रहे एक कथित व्यक्ति का टीम पीएस शास्त्री पार्क द्वारा पता लगाया गया और उस पर मुकदमा चलाया

परिवहन विशेष न्यूज

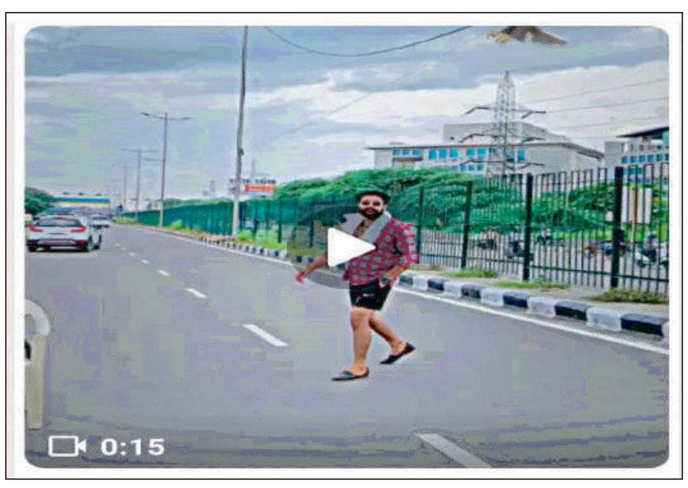


**नई दिल्ली।** वह यातायात को बाधित कर रहा था और अन्य सड़क उपयोगकर्ताओं के जीवन को खतरे में डाल रहा था। कथित व्यक्ति सार्वजनिक रास्ता अवरुद्ध/अवरुद्ध करके यातायात नियमों का उल्लंघन कर रहा था। उन पर आईपीसी और मोटर वाहन अधिनियम के प्रावधानों के तहत मुकदमा चलाया गया। उन्होंने सोशल मीडिया पर प्रचार पाने के लिए इंस्टाग्राम रील बनाने का अपराध किया। उसकी मोटरसाइकिल और मोबाइल फोन जब्त कर लिया गया है। उनके इंस्टाग्राम अकाउंट को ब्लॉक करने की कार्यवाही पीएस साइबर/एनईडी के माध्यम से शुरू कर दी गई है। इंस्टाग्राम पर एक वीडियो जिसमें एक व्यक्ति इंस्टाग्राम रील्स बनाने के लिए दूसरों की जान खतरे में डालकर खतरनाक स्टंट कर रहा है, ट्विटर पर वायरल हो रहा था। (एक्स) वीडियो की पुष्टि करने पर, व्यक्ति को मुख्य जीटी रोड के बीच में एक कुर्सी पर बैठा देखा गया और उसकी बाइक उसके बगल में खड़ी थी और वाहनों के यातायात को अवरुद्ध/बाधित कर रही थी। वीडियो में कोई उनसे कह रहा है कि ये नियम के खिलाफ है और शख्स जवाब दे रहा है कि 'बदमाश है जी'. तुरंत, इस पर संज्ञान लेते हुए, उत्तर-पूर्वी जिले के सोशल मीडिया, जिसमें एएसआई बाबू लाल और एचसी नीरज वशिष्ठ शामिल थे, ने खड़ी मोटरसाइकिल के स्वामित्व का पता लगाया जैसा कि वीडियो और उसकी इंस्टाग्राम आईडी में दिखाया गया है। इसे आवश्यक कानूनी कार्रवाई करने के लिए एसएचओ/पीएस शास्त्री पार्क और उसके इंस्टाग्राम अकाउंट को हटाने के लिए एसएचओ/पीएस साइबर को भेज दिया गया था।कुछ ही घंटों में, इंस्पेक्टर के नेतृत्व में पीएस शास्त्री पार्क की एक टीम मंजीत तोमर में एसआई रॉकी कैटिंगल, एचसी शिव राज, एचसी हवा सिंह, सीटी शामिल थे। चांद राम एवं सीटी. रणजीत ने कथित व्यक्ति का पता लगाया जिसकी पहचान विपिन कुमार पुत्र देशपाल निवासी जगजीत नगर, न्यू उस्मानपुर, दिल्ली, उम्र- 26 वर्ष के रूप में हुई। तदनुसार, पीएस शास्त्री पार्क, दिल्ली में एफआईआर संख्या 203/24 धारा 283/341 आईपीसी आर/डब्ल्यू 201 मोटर वाहन अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है और उसे उसके घर से गिरफ्तार कर लिया गया है। कथित व्यक्ति का मोबाइल फोन जिसमें कृत्य का वीडियो बनाया गया था और स्प्लेंडर मोटरसाइकिल जिसका पंजीकरण नं. रील बनाने में प्रयुक्त डीएल1एस एडी 4983 को कानून के प्रावधानों के तहत बरामद कर जब्त कर लिया गया है। अपील: सभी नागरिकों विशेषकर युवाओं को सलाह दी जाती है कि वे ऐसे लापरवाह कार्य न करें और जिम्मेदारी से व्यवहार करें और सोशल मीडिया का अच्छा उपयोग करें।

**(डॉ. जॉय तिर्की) आईपीएस, उप. पुलिस आयुक्त उत्तर-पूर्वी जिला, दिल्ली।**

## संस्कारशाला : बोरीयत से मुक्ति के लिए : जीवन में बदलाव का महत्व – डॉ अंकुर शरण

परिवहन विशेष

कहते हैं, जब इंसान जीवन में बोरियत को महसूस करने लगता है, तो यह समय है कि उसे अपने जीवन में बदलाव लाने की आवश्यकता महसूस होती है। जीवन में स्थिरता के साथ, हम सभी कभी-कभार बोरियत महसूस करते हैं। यह बोरियत हमारे दिनचर्या को उबाऊ और निराशाजनक बना सकती है।

बोरियत का मुख्य कारण हमारी जीवन में एक जैसे पैटर्न में रहना होता है। जब हम लगातार एक ही तरीके से काम करते रहते हैं या हर दिन एक ही गतिविधि करते रहते हैं, तो हमारी मनोदशा थका देने वाली हो जाती है। इससे हमारा दिल और मन उसे अच्छा नहीं मानते और हम उससे निराश हो जाते हैं।

इस समस्या का समाधान बदलाव में है। जीवन में बदलाव लाने का मतलब है नए काम करने, नई चीजें सीखने और नए अनुभवों का आनंद लेने का। हमें नए चुनौतियों को स्वागत करना चाहिए और नई राहों का पता लगाने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

बदलाव आमतौर पर डरावना लगता है, लेकिन यह बिल्कुल भी नहीं है। बदलाव वास्तव में हमारे लिए एक नई संभावना हो सकता है और हमें नए परिपेक्ष्यों से जीने का अवसर देता है।

बदलाव अधिक सकारात्मक और सत्यापित अनुभवों की दिशा में होना चाहिए। हमें यह समझना चाहिए कि बदलाव हमें अधिक संवेदनशील, उत्साही और सफल बना सकता है।

इसलिए, जीवन में बोरियत को दूर करने का सबसे अच्छा तरीका नए अनुभवों को स्वागत करना और नए संभावनाओं को खोजना है। हमें स्वयं को स्थिर रखने के लिए सकारात्मक बदलाव लाने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

**सोशल मीडिया और मोबाइल से दूर रहने का महत्व: परिवार और आत्मसमर्पण**

सोशल मीडिया और मोबाइल फोन ने हमें अपने दोस्तों और दुनिया के साथ जोड़ दिया है, लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि इसका हमारे परिवार और प्रियजनों से दूरी का क्या असर हो सकता है? जब हम सोशल मीडिया और मोबाइल के चक्कर में अपने परिवार के साथ होते हैं, तो हम उनसे और अकेलापन को महसूस कर सकते हैं।

आजकल का जमाना ऐसा है कि हर कोई एक से बढ़कर एक डिवाइसों में इंटरनेट की दुनिया में खोया रहता है। लेकिन इसके साथ ही, हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हमारा परिवार हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण है। सोशल मीडिया और मोबाइल फोन का उपयोग हमें आलोचना के लिए उपलब्ध कराता है, लेकिन यह हमें अपने परिवार के साथ समय बिताने के अवसरों से वंचित करता है।

जब हम सोशल मीडिया और मोबाइल से दूर रहते हैं, तो हम अपने परिवार के साथ अधिक समय बिता सकते हैं। यह हमें अपने परिवार के साथ संवाद करने, उनकी आवाज को सुनने, और उनके साथ अनुभवों को साझा करने का मौका देता है। यह हमें अपने आत्मीयता का महत्व समझने में मदद करता है और हमें अपने परिवार के प्रति अधिक समर्पित बनाता है।

सोशल मीडिया और मोबाइल का उपयोग करने की हमारी आदतें हमें अपने परिवार और स्वयं को खोने के खतरे से जूझने के लिए मजबूर कर सकती हैं। लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारा परिवार हमारे लिए हमेशा वहां है, और हमें उनसे संपर्क में रहना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इसलिए, हमें सोशल मीडिया और मोबाइल से दूर रहने के लिए समय निकालने का प्रयास करना चाहिए, ताकि हम अपने परिवार के साथ जीवन के अनमोल पलों का आनंद उठा सकें।

## सड़क सुरक्षा सर्वेक्षण से अजरौंदा, नीलम फ्लाईओवर, फरीदाबाद पर तत्काल चिंताओं का पता चला

परिवहन विशेष

रोड सेफ्टी ओमनी फाउंडेशन के नेतृत्व में सड़क सुरक्षा टीम द्वारा हाल ही में किए गए एक सड़क सुरक्षा सर्वेक्षण में, अजरौंदा, नीलम फ्लाईओवर पर सुरक्षा स्थितियों के बारे में चौंकाने वाले निष्कर्ष सामने आए हैं। 27 अप्रैल 2024 को आयोजित सर्वेक्षण, कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डालता है जो स्थानीय अधिकारियों और हितधारकों से तत्काल ध्यान देने की मांग करते हैं।

**अतिक्रमण यातायात प्रवाह में बाधक है, यह सड़क जो है सर्विस रोड**

सर्वेक्षण में पहचानी गई सबसे गंभीर चिंताओं में से एक पूरी सड़क पर व्यापक अतिक्रमण है (Service Road), जो यातायात के प्रवाह को गंभीर रूप से बाधित करता है। इन अतिक्रमणों की मौजूदगी न केवल भीड़भाड़ का कारण बनती है, बल्कि मोटर चालकों और पैदल यात्रियों के लिए भी महत्वपूर्ण सुरक्षा जोखिम पैदा करती है। रिपोर्ट इस बात पर प्रकाश डालती है कि इस मुद्दे को हल करने से ट्रैफिक जाम कम हो सकता है और सुगम आवाजाही की सुविधा मिल सकती है, खासकर उन वाहनों के लिए जो मथुरा रोड की ओर बाईं ओर मुड़ना चाहते हैं।

**रास्ते का दुरुपयोग पैदल चलने वालों को खतरे में डालता है**

एक और परेशान करने वाली बात यह है कि दोपहिया वाहनों द्वारा ड्राइविंग के लिए फुटपाथों का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग किया जा रहा है। यह लापरवाह व्यवहार न केवल यातायात नियमों का उल्लंघन करता है बल्कि पैदल यात्रियों की सुरक्षा को भी खतरे में डालता है। इस खतरनाक प्रथा पर अंकुश लगाने और सभी सड़क उपयोगकर्ताओं की भलाई की रक्षा के लिए यातायात कानूनों को तत्काल लागू करना अत्यावश्यक है।

**घटिया मरम्मत कार्य चिंता बढ़ाता है**

चल रहे मरम्मत प्रयासों के बावजूद, नीलम फ्लाईओवर की स्थिति चिंता का कारण बनी हुई है। सर्वेक्षण में घटिया मरम्मत कार्य के उदाहरण सामने आए हैं, जो यात्रियों के लिए संभावित सुरक्षा खतरों का संकेत देते हैं। सुरक्षा मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करने और किसी भी अप्रत्याशित दुर्घटना को रोकने के लिए मरम्मत कार्य का गहन निरीक्षण आवश्यक है।

**आग लगने की घटना से बढ़ी चिंता**

सर्वेक्षण रिपोर्ट फ्लाईओवर के नीचे के क्षेत्र में हाल ही में हुई आग की घटना पर भी प्रकाश डालती है, जो इस संवेदनशील स्थान पर अतिक्रमण को संबोधित करने की तात्कालिकता को रेखांकित करती है। फ्लाईओवर के नीचे अतिक्रमण हटाने में विफलता न केवल सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करती है, बल्कि बुनियादी ढांचे की संरचनात्मक अखंडता को भी खतरे में डालती है।

**कार्यवाई के लिए बुलावा**

इन निष्कर्षों के आलोक में, सड़क सुरक्षा टीम स्थानीय अधिकारियों और हितधारकों से पहचानी गई चिंताओं को दूर करने के लिए तत्काल और निर्णायक कार्रवाई करने का आग्रह करती है। इसमें अतिक्रमण को तत्काल हटाना, यातायात कानूनों को सख्ती से लागू करना और मरम्मत कार्य का गहन निरीक्षण शामिल है। इसके अतिरिक्त, जोखिमों को कम करने और संभावित आपदाओं को रोकने के लिए फ्लाईओवर के नीचे अतिक्रमण को हटाना आवश्यक है।

रोड सेफ्टी ओमनी फाउंडेशन सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देने और सभी सड़क उपयोगकर्ताओं की भलाई की वकालत करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह जरूरी है कि सर्वेक्षण में उजागर किए गए मुद्दों के समाधान के लिए ठोस प्रयास किए जाएं और अजरौंदा, नीलम फ्लाईओवर की सुरक्षा और अखंडता सुनिश्चित की जाए।

# प्रभु श्री राम भक्त हनुमान जी ने ये तीन काम छोड़े

हनुमान जी को भगवान सदा अपने पास बैठाते हैं, क्योंकि हनुमान जी ने तीन काम किए। माना जाता है कि जो जातक यह तीन कार्य कर लेता है, भगवान उसका साथ कभी नहीं छोड़ते, हमेशा उसपर अपनी कृपा बनाए रखते हैं।

**1. हनुमान जी ने नाम छोड़ा** हनुमान जी ने अपना कोई नाम नहीं रखा। हनुमान जी के जितने भी नाम हैं, सभी उनके कार्यों के कारण पड़े हैं। एक दिन जब हनुमान जी से पूछा तो कि आपने अपना कोई नाम क्यों नहीं रखा तो हनुमान जी बोले, नाम तो दो ही सुंदर हैं राम और कृष्ण। विभीषण जी के पास जब हनुमान जी गए तो विभीषण जी बोले, आपने भगवान की इतनी सुंदर कथा सुनाई, आप अपना नाम तो बताइये। हनुमान जी बोले प्रात लेई जो नाम हमारा, तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा। अर्थात प्रातः काल हमारा नाम जो लेता है, उस दिन उसे आहार तक नहीं मिलता। हनुमान जी ने नाम छोड़ा और हम नाम के पीछे ही मरे जाते हैं।

**2. हनुमान जी ने रूप छोड़ा** हनुमान जी बंदर का रूप लेकर आये! हनुमान जी से किसी ने पूछा, आप रूप बिगाड़कर क्यों आये तो हनुमान जी बोले यदि मैं रूपवान हो गया तो भगवान पीछे रह जाएंगे। इस पर भगवान बोले, चिंता मत करो हनुमान मेरे नाम से ज्यादा तुम्हारा नाम होगा और ऐसा हुआ भी राम के दरबार में पहला दर्शन हनुमान का ही होता है।

**3. हनुमान जी ने यश छोड़ा** एक बार भगवान वानरों के बीच में बैठे थे, सोचने लगे हनुमान तो अपने मुख से स्वयं कहेंगे नहीं, इसलिए हनुमान की बड़ाई करते हुए बोले, हनुमान तुमने इतना बड़ा सागर लांघा जिसे कोई नहीं लांघ सका। हनुमान जी बोले प्रभु इसमें मेरी क्या बिसात, आपके नाम की मुंदरी ने पार लगवा दिया। प्रभु मुद्रिका मेल मुख माही भगवान बोले, अच्छा हनुमान चलो मेरी नाम की मुंदरी ने उस पार लगाया फिर जब तुम लौटे तब तो मुंदरी जानकी को दे आए थे फिर लौटते में किसने पार लगाया? इस पर हनुमान जी बोले, प्रभु आपकी कृपा ने (मुंदरी) ने उस पार किया और माता सीता की कृपा (चूड़ामणि) ने इस पार किया। भगवान ने मुस्कराते हुए पूछा, और लंका कैसे जली ? हनुमान जी बोले, लंका को जलाया आपके प्रताप ने, लंका को जलाया रावण के पाप ने, लंका को जलाया मां जानकी के श्राप ने.। भगवान ने मुस्कराते हुए घोषणा की. हे हनुमान. तुमने यश छोड़ा है. इसलिए न जाने तुम्हारा यश कौन-कौन गाएगा.।। नासे रोग हरे सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत बलबीरा।।

# वल्लभाचार्य जयंती : पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक

भारत अनेकता में एकता रखने वाला देश है। यहां पर विभिन्न धर्म, विभिन्न संस्कृतियों के लोग वास करते हैं। यहां तो प्रकृति में भी विविधता देखने को मिलती है। कहीं बहुत तेज गर्मी तो कहीं कडक़ड़ाती ठंड, कहीं दूर-दूर तक सुनहरा रेगिस्तान तो कहीं पहाड़ ही पहाड़। इन्हीं भिन्नताओं में जो एक चीज हमें बांधे रखती है, वह है हमारी भारतीयता और भारतीयों का अध्यात्म से बहुत गहरा नाता रहा है। अध्यात्म भी हमारे यहां भिन्न प्रकार का मिलता है, कई प्रकार की भक्ति मिलती है। कोई ईश्वर के साकार यानी सगुण रूप को मानता है तो कोई निराकार यानी निर्गुण रूप को। जब भी भक्ति या अध्यात्म की बात होती है तो याद आती है भारत में भक्ति की अविरल धाराओं की जो शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माध्वाचार्य, आचार्य निंबार्क और वल्लभाचार्य से होती हुई अभी तक नए-पुराने रूपों में बहती चली आ रही हैं। वल्लभाचार्य कृष्ण भक्ति शाखा के वह आधारस्तंभ हैं जिन्होंने साधना के लिए पुष्टिमार्ग से परिचित करवाया, जिन्होंने सूरदास को पुष्टिमार्ग का जहाज बनाया। पुष्टिमार्ग के इस प्रवर्तक की जयंती वैशाख के पावन मास में मनाई जाती है। माना जाता है कि वैशाख मास की कृष्ण एकादशी को कृष्णभक्ति के मार्ग को दिखाने वाले सूरदास को लीलाधर की लीलाओं से परिचित कराने वाले वल्लभाचार्य का जन्म हुआ था।

**वल्लभाचार्य का जीवन परिचय :** पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक श्री वल्लभाचार्य जी का जन्म विक्रमी संवत 1535 में दक्षिण भारत के कांकरवाड़ ग्राम, जो कि वर्तमान में छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के निकट चंपारण है, में तैलंग ब्राह्मण श्री लक्ष्मण भट्ट जी के घर हुआ। उनकी माता का नाम इल्लमागारू था। उनके जन्म को लेकर एक किंवदंती भी प्रचलित है जिसके अनुसार कहा जाता है कि उनका जन्म माता इल्लमागारू के गर्भ से अष्टमास में ही हो गया था। उनको मृत जान माता-पिता ने छोड़ दिया जिसके पश्चात श्री नाथ जी ने स्वयं स्वप्न में माता इल्लमागारू को दर्शन दिए और कहा कि स्वयं श्री नाथ जी उनके गर्भ से प्रकट हुए हैं। जिस शिशु को आप मृत जान छोड़ आए हैं, वह जीवित है। तत्पश्चात माता-पिता उन्हें वापस ले जाने हेतु उसी स्थान पर पहुंचे तो देखा कि अग्निकुंड के बीच वह अंगूठा चूस रहे हैं और अग्निकुंड के इर्द-गिर्द सात अवगढ़ साधु बैठे हैं। जब उन्होंने साधुओं से कहा कि शिशु उनका है तो उन्होंने अग्निकुंड से शिशु को निकालने में अपनी असमर्थता प्रकट की। तब उन्होंने श्री नाथ जी का ध्यान लगाया और अपने शिशु को अग्निकुंड से निकाला। इसी कारण श्री वल्लभाचार्य जी को अग्नि-अवतार भी माना जाता है और चंपारण पुष्टिमार्गी साधना का स्थल माना जाता है। श्री वल्लभाचार्य जी के अनुसार ब्रह्म, जगत और जीव की सत्ता को स्वीकार्य तत्त्व मानते हैं। उन्होंने ब्रह्म के आधिदैविक, आध्यात्मिक और अंतर्यामी आदि तीन स्वरूप बताए हैं।

# पर्यावरण पाठशाला : सार्वजनिक शौचालय की सफाई और रखरखाव में स्वस्थ अभियान में हमारी असफलता - डॉ अंकुर शरण

सार्वजनिक शौचालयों की सफाई और रखरखाव में हमारी असफलता सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियान को अवरुद्ध कर रही है। यह समस्या शहरी क्षेत्रों में खुले में स्थित शौचालयों को लेकर विशेष रूप से गंभीर है।

कारणः इस असफलता के पीछे कई कारण हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण हैं:

संगठन की अनुपस्थितिः सार्वजनिक शौचालयों की संचालन और रखरखाव के लिए एक संगठन की आवश्यकता होती है, लेकिन ऐसा संगठन अक्सर अभावग्रस्त होता है।

लापरवाहीः अनेक बार, स्थानीय अधिकारियों की लापरवाही के कारण, शौचालयों का नियंत्रण और सफाई संबंधी अस्तित्व खतरे में होता है।

सामग्री की अभावः सार्वजनिक शौचालयों में साफ़ाई और रखरखाव के लिए आवश्यक सामग्री की अभाव भी एक महत्वपूर्ण कारण है।

सुझावः इस समस्या का हल निम्नलिखित कदमों के माध्यम से संभव है:

संगठन की स्थापनाः सार्वजनिक शौचालयों के संचालन और रखरखाव के लिए एक संगठन की स्थापना करना आवश्यक है, जो सुनिश्चित करे कि सार्वजनिक शौचालयों की स्थिति समय-समय पर निरीक्षित और सुधारी जाती रहे।

संवेदनशीलताः स्थानीय अधिकारियों को सार्वजनिक शौचालयों के मामले में अधिक संवेदनशील बनना चाहिए, और उन्हें निर्देशित किया जाना चाहिए कि इसे साफ और सुरक्षित रखने का महत्व समझा जाए।

सामग्री की प्राप्तिः आवश्यक सामग्री को स्थानीय स्तर पर सुनिश्चित करने के लिए, सरकारी संसाधनों का सही उपयोग करना चाहिए।

सार्वजनिक शौचालयों की सफाई और रखरखाव में स्वस्थ अभियान की सफलता के लिए संगठन, संवेदनशीलता, और सामग्री की सही प्राप्ति महत्वपूर्ण हैं। इन कदमों के अभाव में, हम इस अभियान में असफल हो रहे हैं, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य को खतरे में डाल सकता है।

**सार्वजनिक स्थानों पर मूत्राशन के प्रभाव**

सार्वजनिक स्थानों पर मूत्राशन एक गंभीर समस्या है जो हमारे समाज को शर्मिंदा करती है। इस समस्या का सामना हमारी समुदाय के निवासियों, आरडब्ल्यूए (RWA) और बाजार के सदस्यों को करना पड़ता है।

**प्रभावः**

सार्वजनिक स्थानों पर मूत्राशन के प्रमुख प्रभावों में से एक यह है कि यह सार्वजनिक स्वच्छता को प्रतिबंधित करता है। इससे न केवल स्थानीय मिट्टी, बिल्डिंगों और सार्वजनिक संपत्ति का क्षति होता है, बल्कि यह भी स्वच्छता और संचार के स्तर को नीचे खींचता है।

इसके अतिरिक्त, मूत्राशन के दौरान उत्पन्न अस्वस्थता संक्रमण की आशंका होती है, जो जनस्वास्थ्य को खतरे में डालता है।

ऐसे कृत्य सामाजिक संबंधों को भी बिगाड़ते हैं और सामुदायिक सहभागिता की भावना को कमजोर करते हैं।

**सुझावः**

सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देना चाहिए ताकि लोग मूत्राशन के खिलाफ संज्ञान और साहसी हों।

सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षित और स्वच्छ शौचालय की प्रासंगिकता को बढ़ाया जाना चाहिए।

निर्माण और संचालन में स्थानीय समुदायों को सहयोग करना चाहिए ताकि वे अपने स्थानीय समुदाय में उचित अवसरों का निर्माण कर सकें।

मूत्राशन का आम बनाना और सार्वजनिक स्थानों पर इस तरह के कृत्यों को नियंत्रित करना सामाजिक स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति हमारे संविदा को सुधार सकता है।

# डायबिटीज में कहीं ये भूल आप तो नहीं कर रहे है, ब्लड शुगर की दवा

बहुत से लोगों को लगता है कि अधिक चीनी खाने से डायबिटीज हो जाती है तो यह सच बिल्कुल भी नहीं है। वहीं डायबिटीज होने पर चीनी जिम्मेदार नहीं होती, बल्कि शुगर रोगियों को इस दौरान चीनी नहीं खानी चाहिए। टाइप 2 डायबिटीज के पीछे क्या कारण है इस लेख में हम आपको बताएंगे।

आमतौर पर कई लोगों का लगता है अधिक चीनी के सेवन से डायबिटीज हो जाती है, लेकिन यह सच नहीं है। डायबिटीज होने पर चीनी जिम्मेदार नहीं हो सकती है। अगर आपको शुगर की बीमारी हो गई है तो आप चीनी नहीं खाना चाहिए। डायिबटीज रोगी कई बार भूल जाते और ये बड़ी गलतियां करते रहते हैं। अगर आप भी कर रहे हैं तो ब्लड शुगर की दवा हो जाएगी फेल अगर ये एक चीज नहीं हुई कंट्रोल।

डायबिटीज होने का सबसे बड़ा कारण माना जाता है आपकी खराब लाइफस्टाइल होना। खाने-पीने की गलत आदतें, रात में देर से खाना, ज्यादा कार्ब्स लेना और फिजिकली एक्टिव न होना। क्या आप जानते हैं? डायबिटीज होने के बाद अगर लाइफस्टाइल सुधार जाए तो शुगर को कंट्रोल किया जा सकता है। अगर ये एक चीज ऐसी है वह आपने नहीं अपने लाइफ से हटाई तो डायबिटीज की दवा भी शुगर कम नहीं कर पाएगी।

**तनाव :** तनाव लेने से डायबिटीज रोगियों का शुगर लेवल कभी भी कंट्रोल नहीं होता। तनाव की वजह से ब्लड शुगर की दवाई भी फेल हो जाएगी। क्योंकि तनाव की वजह से कोर्टिसोल और एड्रेनालाईन हार्मोन बढ़ते हैं और शरीर में इंसुलिन विफलता यानी इंसुलिन प्रतिरोध होता है। वहीं इसमें मांसपेशियां ग्लूकोज का उपोग नहीं कर पाती हैं और फिर ब्लड शुगर लेवल बढ़ने लगता है। ऐसे में दवा या इंसुलिन का डोज भी बढ़ता जाता है लेकिन शुगर कंट्रोल नहीं होती है। इसलिए डायबिटीज कंट्रोल के लिए तनाव से बचना बेहद जरुरी है।

# बेदाग स्किन के लिए ट्राई करें ये घरेलू नुस्खे, चेहरे पर आएगा गजब का ग्लो

आजकल बढ़ते पॉल्यूशन के कारण त्वचा को डैमेज होने से बचाना काफी मुश्किल होता है। अब तो मार्केट में कई महंगे से महंगे प्रोडक्ट से भी स्किन से भी उचित देखभाल करना आसान नहीं होता है।

हर किसी की चाहत होती है कि उनकी त्वचा चमकदार और बेदाग हो। लेकिन आजकल बढ़ते पॉल्यूशन के कारण त्वचा को डैमेज होने से बचाना काफी मुश्किल होता है। अब तो मार्केट में कई महंगे से महंगे प्रोडक्ट से भी स्किन से भी उचित देखभाल करना आसान नहीं होता है। कुछ आसान और ट्रेडिशनल घरेलू उपाय की मदद से स्किन को बेदाग और चमकदार बनाया जा सकता है।

ऐसे में अगर आप भी अपनी स्किन को बेदाग और चमकदार बनाना चाहती हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए हैं। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसे ही आसान टिप्स देने जा रहे हैं।

**चेहरे पर शाइन लाने के घरेलू उपाय**

नारियल पानी का इस्तेमाल आप फेस टोनर की तरह से कर सकते हैं। इससे आपकी स्किन डीप मॉइश्चराइज भी होती है। इससे फेस पर शाइन आती है। अगर आपके फेस पर फेस दाग-धब्बे कम हो जाते हैं।

दूध में हल्दी मिक्स कर आप अपने फेस पर लगा सकती हैं। क्योंकि दूध और हल्दी दोनों में एंटी एजिंग पाए जाते हैं। इससे आपकी स्किन में कसाव आता है और चेहरे की शाइन बढ़ जाती है। आप चाहें तो रोजाना इस नुस्खे का प्रयोग कर सकती हैं।

रात में सोने से पहले फेस की नारियल तेल की सिर्फ 2 बूंद लेकर मसाज करें। 5 मिनट तक मसाज करने से त्वचा का ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होगा। इससे आपकी स्किन सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणों से डैमेज होने से बच जाएगी। आप इस नुस्खे को रोजाना ट्राई कर सकते हैं।

एलोवेरा जेल में स्किन को हील करने की प्रॉपर्टीज पायी जाती हैं। आप एलोवेरा जेल में थोड़ा सा गुलाबजल मिक्स कर फेस पर स्किन टोनर की तरह इस्तेमाल कर सकती हैं। क्योंकि एलोवेरा जेल में विटामिन सी पाया जाता है। जिससे आपकी त्वचा ब्लीच होती है और स्किन में चमक आती है।

अगर आपके फेस पर डेड स्किन की परत जम गई है, तो इसको हटाने के लिए स्किन को एक्सफोलिएट करना बेहद जरूरी है। इसके लिए बेकिंग सोडा में 1 छोटा चम्मच शहद मिलाकर इससे फेस पर स्क्रब करें।

# आत्म-जागरूकता: अपनी आदतों का परिणाम और परिवार का महत्व

जीवन में हम बहुत से अनुभव करते हैं, और बहुत सी आदतें हमारे दिनचर्या का महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती हैं। लेकिन क्या हम यह सोचते हैं कि हमारी आदतों का हमारे जीवन और हमारे परिवार पर क्या प्रभाव होता है?

अक्सर हम नई आदतों को अपनाते हैं बिना इसके परिणामों को सोचे। सोशल मीडिया और मोबाइल की आदत एक ऐसी ही है, जो हमें अपने परिवार और प्रियजनों से दूर कर सकती है। जब हम अपने समय का बड़ा हिस्सा सोशल मीडिया और मोबाइल पर बिताते हैं, तो हमें अपने परिवार के साथ बिताए गए समय की कमी महसूस होती है।

एक और महत्वपूर्ण बात है कि जब हम इस दुनिया से चले जाते हैं, तो हमारे लिए सिर्फ सोशल मीडिया पर रखे गए रिपोस्ट्स नहीं होते। हमारे जीवन की सच्चाई हमारे परिवार के लिए है, जो हमें असली समर्थन और सहारा प्रदान करते हैं।

इसलिए, हमें अपनी आदतों का अवलोकन करने की आवश्यकता है। हमें यह सोचना चाहिए कि हमारे द्वारा चुनी गई आदतें हमें खुश और संतुष्ट बना रहती हैं या फिर हमें चुनौतियों में डालती हैं। हमें अपने परिवार के साथ समय बिताने का समय निकालने की जरूरत है और सोशल मीडिया के प्रभाव को समझने का प्रयास करना चाहिए।

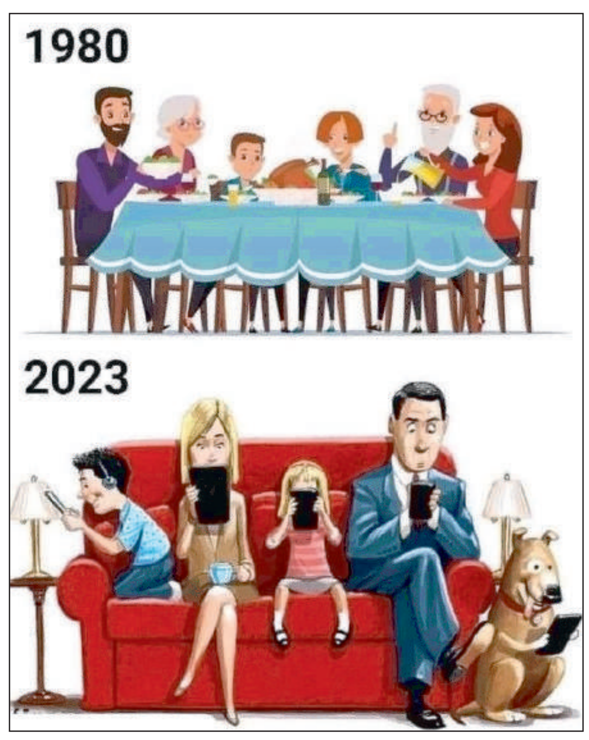

अतः, हमें स्वयं से बातचीत करने और अपनी आदतों का परिणाम समझने का समय निकालना चाहिए। हमें अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने की महत्वपूर्णता को समझना चाहिए और उनसे सहयोग और समर्थन प्राप्त करने के लिए उनके साथ जुड़ना चाहिए। इससे हम अपने आत्मा को संतुष्ट, खुश और सकारात्मक बना सकेंगे।

# पर्यावरण पाठशाला : परिवार और पर्यावरण : जीवन के प्रारंभिक सीख : डॉ अंकुर शरण

जीवन के प्रारंभिक दौर में हम कई चीजें सीखते हैं, और सबसे महत्वपूर्ण सीख हमें हमारे परिवार और पर्यावरण से मिलती है। हमारे परिवार और महौल का महत्व इतना होता है कि वे हमें हमारे जीवन के मूल नियमों को सिखाते हैं।

परिवार हमें प्रेम और समर्थन की भावना सिखाता है। वह हमें समाज में स्थान और मूल्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक गुण सिखाता है। हमारे परिवार सदैव हमारे साथ होते हैं, हमें आत्म-विश्वास और साहस प्रदान करते हैं और हमें अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करते हैं।

साथ ही, हमारा पर्यावरण भी हमें अनगिनत सीख देता है। प्राकृतिक सौंदर्य और स्वच्छता की महत्वपूर्णता, प्राकृतिक संसाधनों की संरक्षा और पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान की भूमिका हमें हमेशा याद दिलाती है।

अच्छी आदतें हमें मानवता और संवेदनशीलता सिखाती हैं, जबकि बुरी आदतें हमें असभ्यता और क्षमता की कमी को सिखाती हैं। हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारी आदतों का हमारे जीवन पर बड़ा प्रभाव होता है, और हमें अच्छी आदतों को अपनाने की कोशिश करनी चाहिए।

इसलिए, हमें अपने परिवार के साथ रहने का महत्व और हमारे पर्यावरण के साथ जुड़ने की महत्वपूर्णता को समझना चाहिए। यह हमें एक समृद्ध और संतुलित जीवन जीने में मदद करेगा।

# लोकसभा चुनाव में हर राजनैतिक दल चुनाव आयोग को अपना घोषणा पत्र जमा कराए , फोरम की मांग

परिवहन विशेष न्यूज

घोषणा पत्र लागू न करने वाले दलों की मान्यता समाप्त की जाए।

**नई दिल्ली।** दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षकों के संगठन "फोरम ऑफ एकेडेमिक्स फॉर सोशल जस्टिस" ने लोकसभा चुनाव -2024 में हरेक राजनैतिक दल का चुनावी घोषणा पत्र चुनाव आयोग में जमा कराने की मांग की है और कहा है कि चुनाव जीतकर शासन में आने पर चुनावी घोषणा में जनता से किए गए वायदे को पूरा न करने पर उस पार्टी की मान्यता समाप्त कर दी जानी चाहिए।

फोरम के चेयरमैन डॉ. हंसराज सुमन ने चुनाव आयोग को लिखे पत्र में बताया है कि हर पाँच साल बाद लोकसभा चुनाव होते है जिसमें हर राजनैतिक दल जनता को लुभाने के लिए अपने - अपने घोषणा पत्रों में बड़े- बड़े वायदे करते हैं जिसके आधार पर जनता से वोट देने की अपील करते हैं। चुनाव जीतने के बाद सरकार बना लेने पर ये राजनीतिक दल जनता से किए गए वायदे की उपेक्षा करने लगते हैं जबकि जनता ने उन्हें किए गए वायदों पर ही समर्थन दिया था। यह लोकतंत्र में जनता के साथ धोखाधड़ी है। चूंकि चुनाव के समय सभी शक्तियाँ चुनाव आयोग के पास होती है इसलिए चुनाव आयोग की भी जिम्मेदारी बन जाती है कि क्या ये राजनीतिक दल अपने चुनावी घोषणा पत्र में किए गए वायदे पूरा करते हैं या फिर इनका चुनावी घोषणा पत्र एक जुमला बन कर रह जाता है। यदि ऐसा है तो यह जनता के साथ धोखा है और ऐसे राजनीतिक दलों की मान्यता रद्द कर देनी चाहिए।

डॉ. सुमन ने यह भी बताया है कि वर्तमान समय में हरेक राजनैतिक दलों के घोषणा पत्रों का स्वरूप भी बदल गया है, राजनीतिक दलों का मकसद सिर्फ चुनाव जीतने तक रह गया है। इसके लिए जनता के सामने सम्मोहक भाषण और लुभाने वाले वायदे खूब किए जाते हैं। कभी-- कभी तो राजनीतिक दल भारतीय समाज और भारत की आर्थिक स्थिति की अनदेखी करते हुए वायदे करते हैं ऐसे वायदे पूरा करना भी संभव नहीं होता है। सभी राजनीतिक दलों के लिए जीतने पर युवाओं , महिलाओं व समाज के कमजोर वर्गों के लिए कार्य करना उनकी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए लेकिन जीतने पर उनकी प्राथमिकता से ये मुद्दे गायब हो जाते हैं।

डॉ.सुमन के अनुसार आज की युवा पीढ़ी की मुख्य समस्या शिक्षा व रोजगार है। सभी राजनीतिक दल इस समस्या के समाधान का वायदा करते हैं। ये राजनीतिक दल जब चुनाव जीत जाते हैं तो युवाओं को दिशाहीन छोड़ देते हैं जिससे लोगों का जनतंत्र से विश्वास उठ जाता है। यह स्थिति भारत के स्वच्छ लोकतंत्र के लिए बहुत घातक है। उन्होंने यह भी बताया है कि राजनीतिक दलों के आश्वासन पर ही जनता उन्हें वोट देती है। भारतीय लोकतंत्र की यही खासियत जनता और राजनीतिक दलों के बीच सेतु का काम करती है अर्थात परस्पर एक-दूसरे पर विश्वास के कारण ही भारतीय लोकतंत्र की मजबूत स्थिति बनी हुई है। यदि राजनीतिक दल चुनावी घोषणाओं के झूठे वायदे से चुनाव जीतते रहे और सरकार बना कर चुनावी घोषणाओं की उपेक्षा करते रहे तो जनता का सरकार से विश्वास उठ जाएगा और यह स्थिति लोकतंत्र के लिए खतरनाक है।

डॉ. सुमन ने बताया है कि अभी लोकसभा चुनाव -- 2024 में सभी राजनीतिक दल अपने लुभावने घोषणा पत्र के माध्यम से जनता से वोट माँग रहे हैं। चुनाव आयोग को इन सभी दलों के घोषणा पत्र अपने पास रखने चाहिए और आगामी चुनाव में इस पर सवाल उठाना चाहिए यदि राजनीतिक दलों की कार्यशैली अपने घोषणा पत्र के अनुरूप नहीं है तो उसकी मान्यता रद्द कर देनी चाहिए। इसलिए चुनाव आयोग इन राजनीतिक दलों के घोषणा पत्रों पर हस्तक्षेप जरूर करना चाहिए।

**डॉ. हंसराज सुमन**
**चेयरमैन - फोरम ऑफ एकेडेमिक्स फॉर सोशल जस्टिस**
**फोन - 9717114595**

# आम आदमी पार्टी का रोड शो: सुनीता केजरीवाल ने किया रोड शो, बोलीं- इस देश को बचा लीजिए, तानाशाही के खिलाफ वोट करें

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने पूर्वी दिल्ली के कोंडली में एक रोड शो किया। उन्होंने दिल्ली के लोगों से तानाशाही के खिलाफ वोट करने की अपील की है।

**नई दिल्ली।** लोकसभा चुनाव को लेकर राजनेता प्रचार के लिए मैदान में उतरे हुए हैं। दिल्ली में भी प्रचार जोरों पर है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने पूर्वी दिल्ली में मेगा रोड शो निकाला। जिसके बाद उनकी राजनीति में एंट्री हो गई है। यह उनका पहला रोड शो है।

**सड़कों पर लगे केजरीवाल के पोस्टर**

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने पूर्वी दिल्ली से आप के लोकसभा उम्मीदवार कुलदीप कुमार के समर्थन में कोंडली इलाके में रोड शो किया। मिली जानकारी के मुताबिक, कोंडली इलाके में रोड शो से पहले आई लव केजरीवाल और जेल का जवाब वोट से के पोस्टर लगाए गए हैं।

**दिल्ली वालों से सुनीता केजरीवाल की अपील**

सुनीता केजरीवाल ने रोड शो के दौरान कहा कि ये देश तानाशाही की ओर जा रहा है। इस देश को बचा लीजिए। 25 मई को वोटिंग का दिन है। आप लोग वोट देने जाएंगे। उस दिन तानाशाही के खिलाफ वोट दें। जय हिंद.. उन्होंने जेल का जवाब वोट से का नारा भी लगाया।

मंत्री आतिशी ने शुक्रवार को प्रेसवार्ता में बताया कि वे पहली बार आप के चुनावी कार्यक्रम का नेतृत्व कर रही हैं। अभी तक ऐसे कार्यक्रम के प्रमुख मुख्यमंत्री केजरीवाल हुआ करते थे। उनके जेल जाने के बाद इस कमी को दूर करने के लिए सुनीता चुनावी मैदान में हैं।

सुनीता केजरीवाल के रोड शो से पहले दिल्ली मंत्री गोपाल राय ने कहा कि आज से शुरुआत हो रही है। हम लोग रोड शो के जरिए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का मैसेज जनता तक पहुंचाएंगे।

**दिल्ली के अलावा इन राज्यों में भी रोड शो**

रविवार को पश्चिमी दिल्ली में जनता से केजरीवाल के लिए समर्थन मांगेगी। वे दिल्ली के अलावा पंजाब, गुजरात और हरियाणा में भी आप प्रत्याशियों के लिए प्रचार करेंगी। मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी के बाद से दिल्ली में भाजपा के लिए अलग माहौल बन गया है। लोग पूछ रहे हैं कि मुख्यमंत्री को क्यों गिरफ्तार किया गया। हर कोई इस गिरफ्तारी के खिलाफ है। दिल्ली-पंजाब की जनता केजरीवाल के साथ खड़ी है।

**आप का भाजपा पर तंज**

आतिशी ने कहा कि लोकसभा चुनाव की घोषणा के तुरंत बाद केंद्र सरकार ने ईडी की मदद से मुख्यमंत्री को गिरफ्तार कर लिया। भाजपा ने चुनाव में हार के डर के कारण ये कार्रवाई की। भाजपा नहीं चाहती थी कि केजरीवाल चुनावी मैदान में उतरें, लेकिन मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी के बाद भाजपा को नुकसान हुआ है। दिल्ली-पंजाब के साथ दूसरे हिस्सों में जनता मुख्यमंत्री के समर्थन में आई है।

**आप के मंत्री और नेता होंगे शामिल**

रोड शो के दौरान सुनीता के साथ स्थानीय विधायक भी प्रचार करेंगे। रोड शो जिस विधानसभा क्षेत्र से निकलेगा, उसमें स्थानीय विधायक सहित अन्य नेता शामिल होंगे। रोड शो के माध्यम से पार्टी जनता के सामने अपनी बात रखेगी।

## दिल्ली की सातों सीटों पर सोमवार से नामांकन, इन गलतियों से बचें प्रत्याशी; पढ़ें नियम

लोकसभा चुनाव के लिए दिल्ली की सातों सीटों पर 29 अप्रैल से नामांकन प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। रिटर्निंग अधिकारियों के दफ्तरों में उम्मीदवार पहुंचेगे। इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था मजबूत रहेगी।

**नई दिल्ली।** सभी सातों लोकसभा सीटों के लिए सोमवार से नामांकन शुरू हो जाएगा। सभी लोकसभा क्षेत्रों के रिटर्निंग अधिकारी के कार्यालय में सुबह 11 बजे से दोपहर बाद 3 बजे तक नामांकन पत्र दाखिल किए जाएंगे। उम्मीदवारों को रिटर्निंग अधिकारी के कार्यालय से निशुल्क नामांकन पत्र मिलेंगे। नामांकन स्थल पर भीड़ को रोकने के लिए अंदर और बाहर बैरिकेडिंग कर सुरक्षाकर्मी तैनात रहेंगे।

निर्वाचन अधिकारियों ने बताया कि लोकसभा चुनाव की अधिसूचना जारी कर दी गई है। सोमवार सुबह 11 से दोपहर तीन बजे तक नामांकन की प्रक्रिया होगी। तीन बजे के बाद आने वाले किसी भी उम्मीदवार का नामांकन पत्र दाखिल नहीं किया जाएगा। उन्हें अगले दिन आना होगा।

सामान्य वर्ग के प्रत्याशी को 25000 रुपये की जमानत राशि जमा करनी होगी, जबकि एसटी-एससी वर्ग के उम्मीदवारों को 12500 रुपये की जमानत धनराशि जमा करनी होगी। यह धनराशि नकद और आनलाइन माध्यम से दी जा सकती है। नामांकन कक्ष में प्रत्याशी के साथ चार लोगों को प्रवेश दिया जाएगा। इसमें उम्मीदवार के दो प्रस्तावक भी होंगे। नामांकन की प्रक्रिया की वीडियोग्राफी कराई जाएगी।

**ऑनलाइन आवेदन भी कर सकेंगे प्रत्याशी**

प्रत्याशियों को नामांकन के लिए ऑनलाइन आवेदन करने की सुविधा भी मिलेगी। प्रत्याशी चुनाव आयोग की वेबसाइट https://suvidha.eci.gov.in/login पर जाकर ऑनलाइन नामांकन कर सकते हैं। इसकी एक प्रतिलिपि डाउनलोड कर रिटर्निंग अधिकारी के पास जमा करानी होगी।

**100 मीटर की दूरी पर रुकेगा काफिला**

नामांकन स्थल पर आने वाले उम्मीदवारों के काफिले में सिर्फ तीन वाहन ही होंगे। इन्हें नामांकन स्थल से 100 मीटर की दूरी पर ही रोकना होगा।

**दिल्ली में यह है कार्यक्रम**

29 अप्रैल : नामांकन की प्रक्रिया शुरू
6 मई : नामांकन का अंतिम दिन
7 मई : नामांकन पत्रों की जांच
9 मई : नाम वापस लेने का दिन
25 मई : मतदान
04 जून : मतगणना

**13600 मतदान केंद्र होंगे**

दिल्ली में लोकसभा चुनाव के लिए कुल 13600 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। इनमें दिल्ली पुलिस ने 460 को अतिसंवेदनशील माना है। उत्तर-पूर्वी जिले में सबसे ज्यादा करीब 45 अतिसंवेदनशील मतदान केंद्र हैं। इनमें से करीब 20 को बहुत ही ज्यादा अतिसंवेदनशील मतदान केंद्र माना गया है।

वहीं, नई दिल्ली जिले में एक भी अतिसंवेदनशील मतदान केंद्र नहीं है। दिल्ली पुलिस ने यहां पर किसी भी मतदान केंद्र को अतिसंवेदनशील नहीं माना है। उत्तर-पूर्वी दिल्ली के बाद बाहरी दिल्ली अतिसंवेदनशील मतदान केंद्रों के मामले में दूसरे नंबर पर है। यहां पर करीब 42 अतिसंवेदनशील मतदान केंद्र हैं।

**यहां होगा नामांकन**

**लोकसभा क्षेत्र--------रिर्टनिंग अधिकारी कार्यालय**
-चांदनी चौक-----------उपायुक्त ( उत्तर जिला )
-उत्तर पूर्वी-------------उपायुक्त ( उत्तर पूर्वी जिला )
-पूर्वी दिल्ली------------उपायुक्त ( पूर्वी जिला )
-नई दिल्ली-------------उपायुक्त ( नई दिल्ली जिला )
-उत्तर पश्चिमी दिल्ली------उपायुक्त ( उत्तर पश्चिम जिला )
-पश्चिमी दिल्ली----------उपायुक्त ( पश्चिम जिला )
-दक्षिण दिल्ली------------उपायुक्त ( दक्षिण जिला )

# लय की शक्ति को अपनाना: रिदमशाला के साथ एक यात्रा "Rhythmshala, Let's stay in rhythm" : अंकुर

परिवहन विशेष

जीवन में लय वह संवाहक है जो हमारे अस्तित्व को व्यवस्थित करती है। सूर्य और पृथ्वी के दिव्य नृत्य से लेकर हमारे अपने हृदय की स्थिर धड़कन तक, लय हमारे अस्तित्व के हर पहलू में व्याप्त है। यह वह धागा है जो हमें प्राकृतिक दुनिया और एक-दूसरे से जोड़ता है, अस्तित्व के उतार-चढ़ाव के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन करता है।

रिदमशाला में, हम अपने जीवन को आकार देने में लय के गहन महत्व को समझते हैं। हम मानते हैं कि लय केवल एक संगीत अवधारणा नहीं है; यह एक मौलिक शक्ति है जो ब्रह्मांड को नियंत्रित करती है। हमारे अभिनव कार्यक्रम के माध्यम से, हम आपको लय की परिवर्तनकारी शक्ति और हमारे दैनिक जीवन में इसके महत्व का पता लगाने के लिए एक यात्रा शुरू करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

गाड़ी चलाते समय लय की शक्ति को अपनाने से न केवल एक आसान यात्रा सुनिश्चित होती है बल्कि सुरक्षा और यातायात नियमों के पालन को भी बढ़ावा मिलता है। सड़क की गति के साथ तालमेल बिठाकर, ड्राइवर दुर्घटनाओं और उल्लंघनों के जोखिम को कम करते हुए एक सामंजस्यपूर्ण सवारी का आनंद ले सकते हैं। जैसे संगीत में, जहां प्रत्येक स्वर माधुर्य में योगदान देता है, सड़क पर एक सुसंगत लय बनाए रखने से यातायात के सामूहिक प्रवाह को बढ़ावा मिलता है। सड़क की लय को अपनी गतिविधियों का मार्गदर्शन करने देने से हम चौराहों पर नेविगेट करने, लेन को मर्ज करने और परिवर्तनों का आसानी से अनुमान लगाने में सक्षम हो जाते हैं, जिससे सभी के लिए एक सुरक्षित और अधिक सुखद ड्राइविंग अनुभव बनता है।

रिदमशाला में हमारा मिशन सरल लेकिन गहन है: युवाओं और समाज को एक लय में जोड़ना। हमारा मानना है कि हम सभी के भीतर स्पंदित होने वाली मौलिक लय का दोहन करके, हम समुदाय, सद्भाव और सशक्तिकरण की भावना को बढ़ावा दे सकते हैं। ड्रमिंग और संगीत वाद्ययंत्र बजाने के माध्यम से, हमारा लक्ष्य एक ऐसा स्थान बनाना है जहां व्यक्ति सीखने, बढ़ने और बढ़ने के लिए एक साथ आ सकें।

एक बीज से एक फलते-फूलते पौधे तक की यात्रा, प्रकृति के हाथों से संचालित, जीवन की एक स्वर-संगति है। इसकी शुरुआत धरती में बसे एक बीज के शांत वादे से होती है, जो धैर्यपूर्वक फूटने के क्षण का इंतजार कर रहा है। सूरज की रोशनी, पानी और मिट्टी के कोमल प्रोत्साहन से, यह अपनी नींद से जागता है, विकास के एक सुंदर नृत्य में नाजुक अंकुरों को ऊपर की ओर भेजता है। प्रत्येक पत्ती का खुलना इस उत्कृष्ट

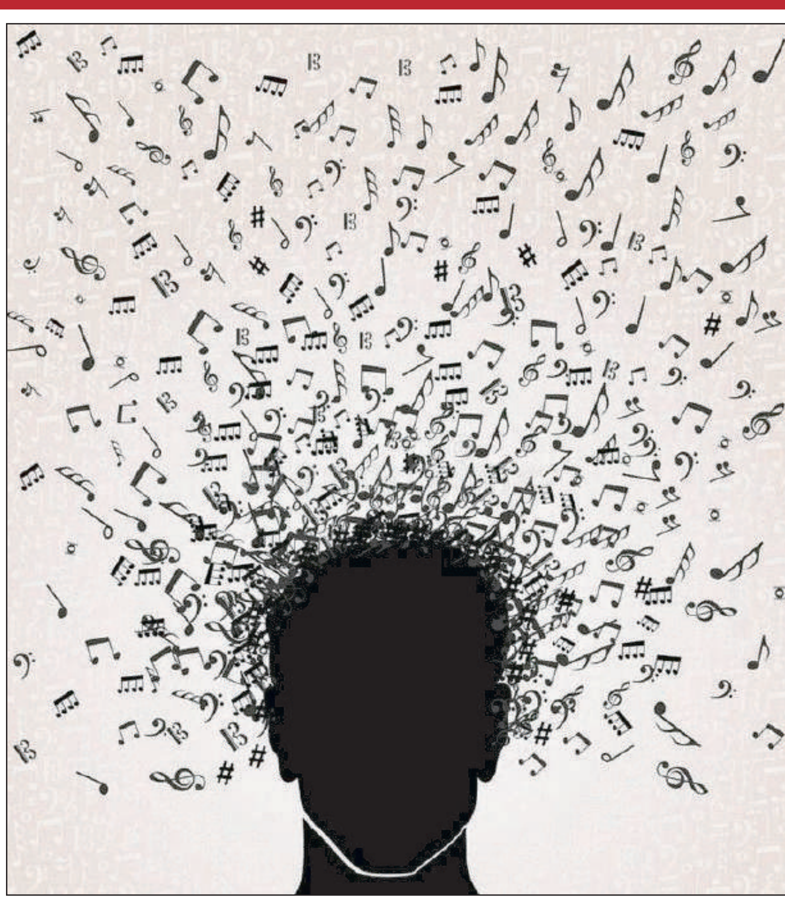

राग में एक स्वर है, जो हवा की फुसफुसाहट और कीड़ों की गुंजन के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। परिवर्तन के मौसमों के माध्यम से, यह फलता-फूलता है, प्रकृति की लय की सुंदरता का प्रमाण है।

इस गर्मी की छुट्टियों में, हम आपको इस रोमांचक साहसिक कार्य में शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हैं। चाहे आप अनुभवी संगीतकार हों या बिल्कुल नौसिखिया, रिदमशाला में आपके लिए जगह है। हमारे अनुभवी प्रशिक्षक आपको लय के मूल सिद्धांतों के माध्यम से मार्गदर्शन करेंगे, और आपको सिखाएंगे कि अपने जीवन को समृद्ध बनाने के लिए इसकी ऊर्जा का उपयोग कैसे करें।

लेकिन रिदमशाला सिर्फ एक संगीत कक्षा से कहीं अधिक है; यह एकता और एकजुटता का एक सामाजिक प्रयोग है। जैसे ही आप ड्रम बजाते हैं और अपने साथी प्रतिभागियों के साथ बजाते हैं, आप सामूहिक लय की परिवर्तनकारी शक्ति का अनुभव करेंगे। साथ मिलकर, हम ध्वनि की एक ऐसी सिम्फनी तैयार करेंगे जो भाषा, संस्कृति और पृष्ठभूमि से परे हो, ऐसे बंधन बनाएगी जो जीवन भर कायम रहेंगे।

हमारे सबसे तेजी से बढ़ते समुदाय के हिस्से के रूप में, आपको न केवल लय की कला सीखने का अवसर मिलेगा, बल्कि अपने से भी बड़ी किसी चीज़ में योगदान करने का भी अवसर मिलेगा। हमारी सहयोगी परियोजनाओं और आयोजनों के माध्यम से, आप अपनी प्रतिभा को दुनिया के साथ साझा करने में सक्षम होंगे और दूसरों को हमारी लयबद्ध क्रांति में शामिल होने के लिए प्रेरित करेंगे। ऐसी दुनिया में जो अक्सर अराजक और खंडित महसूस होती है, रिदमशाला लय और सामंजस्य का अभयारण्य प्रदान करती है। इस गर्मी में हमसे जुड़ें और अपने लिए लय का जादू खोजें। साथ मिलकर, हम ढोल बजाएंगे (djembe), नृत्य करेंगे और एक उज्जवल, अधिक सामंजस्यपूर्ण भविष्य के लिए अपने रास्ते का सपना देखेंगे।

क्या आप लय की शक्ति को अपनाने के लिए तैयार हैं? रिदमशाला में हमसे जुड़ें और अपने दिल की धड़कन को पूर्ण सामंजस्य के साथ जीवन जीने का मार्गदर्शन दें।

**indiangreenbuddy@gmail.com**

# नमो भारत ट्रेन से मोदीनगर नॉर्थ तक नहीं कर सकेंगे सफर; इन स्टेशनों के बीच मिलती रहेगी सेवा

28 अप्रैल को नमो भारत ट्रेन से यात्रा करने वाले यात्री साहिबाबाद से दुहाई के बीच ही सफर कर सकेंगे। मोदीनगर की तरफ से आने वाले यात्रियों को दुहाई स्टेशन आकर ट्रेन सेवाएं लेनी होंगी।

**गाजियाबाद।** दुहाई से मोदीनगर के बीच रविवार को नमो भारत ट्रेनों का संचालन यात्रियों के लिए बंद रहेगा। मेरठ साउथ स्टेशन तक ट्रेन संचालन की तैयारियों के निरीक्षण और सिस्टम अपग्रेड करने के लिए मुरादनगर, मोदीनगर साउथ और मोदीनगर नॉर्थ स्टेशन यात्रा के लिए बंद रखा जाएगा। हालांकि, साहिबाबाद से दुहाई के बीच ट्रेन सेवा निर्धारित समयानुसार जारी रहेंगी।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार 28 अप्रैल को नमो भारत ट्रेन से यात्रा करने वाले यात्री साहिबाबाद से दुहाई के बीच ही सफर कर सकेंगे। मोदीनगर की तरफ से आने वाले यात्रियों को दुहाई स्टेशन आकर ट्रेन सेवाएं लेनी होंगी। मोदीनगर नॉर्थ से मेरठ साउथ तक करीब छह किलोमीटर लंबे कॉरिडोर का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो चुका है। इस सेक्शन पर ट्रायल जारी है। मेरठ साउथ स्टेशन भी बनकर लगभग तैयार हो चुका है। नए सेक्शन पर सिस्टम अपग्रेडेशन का काम किया जाएगा। साथ ही, मुरादनगर से मेरठ नॉर्थ के बीच ट्रेन संचालन की तैयारियों को परखा जाएगा। यात्रियों की सहायता के लिए एनसीआरटीसी ने हेल्पलाइन नंबर 08069651515 जारी किया है।

**मेरठ तक सफर के लिए करना होगा इंतजार**

दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ तक प्रस्तावित कॉरिडोर के साहिबाबाद से मोदीनगर नॉर्थ तक करीब 34 किलोमीटर सेक्शन पर नमो भारत ट्रेन का संचालन हो रहा है। मेरठ साउथ स्टेशन तक ट्रेन संचालन शुरू होने के बाद कॉरिडोर की लंबाई बढ़कर लगभग 40 किलोमीटर हो जाएगी। हालांकि, कॉरिडोर और स्टेशन का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो चुका है, लेकिन चुनाव बाद ही नए सेक्शन को यात्रियों के लिए खोलने की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जाएगी। कमिश्नर मेट्रो रेल सेफ्टी (सीएमआरएस) के निरीक्षण के बाद ही नया सेक्शन खोला जाएगा। हालांकि, पूरा कॉरिडोर जून 2025 तक बनकर तैयार हो पाएगा।

**चुनाव के दिन 7500 यात्रियों ने किया सफर**

लोकसभा चुनाव के लिए 26 अप्रैल को नमो भारत ट्रेन में यात्रियों की संख्या लगभग आधी दर्ज की गई। एनसीआरटीसी प्रवक्ता के अनुसार तकरीबन 7500 यात्रियों ने ट्रेन में सफर किया। मतदान को बढ़ावा देने के लिए मतदान करने वाले यात्रियों को साधारण किराये में प्रीमियम कोच में सफर की छूट दी गई थी। काफी संख्या में यात्रियों ने अंगुली पर लगी मतदान की स्याही दिखाकर प्रीमियम कोच में आरामदायक सफर का आनंद लिया।

## मतदान करने में दिव्यांगों, बुजुर्गों ने भी दिखाया उत्साह

**गाजियाबाद।** शहर, ग्रामीण क्षेत्र के बूथों पर इस बार दिव्यांग और बुजुर्ग मतदाताओं में खासा उत्साह देखने को मिला। कई बुजुर्गों को उनके परिजन अपने साथ लेकर आए तो कई खुद ही मतदान करने के लिए पहुंच गए। ऐसे ही कई दिव्यांग ट्राइसाइकिल तो कुछ अपनी छड़ी के सहारे वोट करने पहुंचे। बूथों पर इन मतदाताओं की खूब सराहना हुई। अधिकारियों ने इनका सम्मान किया। अजनारा समेत कई सोसायटियों में तो बुजुर्गों, बीमारों के लिए ई-रिक्शा का प्रबंध किया गया।

दिव्यांग विजय और रवि ट्राइसाइकिल से अपना वोट डालने के लिए अर्थला में बनाए गए बूथ पर पहुंचे। दोनों ने बताया कि वह पांचवीं बार वोट कर रहे हैं। वह चाहते हैं दिव्यांगों के लिए सुविधाएं और बढ़ाई जाएं। प्रत्येक दिव्यांग को नौकरी मिले। सरकार को ऐसा नियम बनाना चाहिए।

जीडी गोयनका स्कूल में बनाए गए बूथ पर मतदान करने पहुंची 70 वर्षीय राजकली ने बताया कि चुनाव में वोट डालना वह कभी नहीं भूलतीं। इस बार तबीयत खराब थी, लेकिन फिर वोट डालने के लिए बच्चों का सहारा लेकर आईं हूं।

93 साल के अब्दुल वाहिद कैला भट्ठा में बने बूथ पर मतदान करने पहुंचे। उन्होंने बताया कि वह 20 वर्ष की उम्र से मतदान करते आ रहे हैं। यह मौका भी उनके लिए खास है। वह खुद के साथ अपने परिवार को भी वोट डालने से वंचित नहीं रहने देते।

## ठाकुरों के गांव के बूथ पर पसरा रहा सन्नाटा

**साहिबाबाद।** लोकसभा चुनाव 2024 में ठाकुरों के गांव करहेड़ा के बूथ पर दिनभर सन्नाटा पसरा रहा। शुरुआत के पहले घंटे में सुबह आठ बजे तक बूथ पर लोगों की भीड़ रही। इसके बाद से बूथ पर सन्नाटा पसरा रहा। वहीं, बूथ के पास बने पार्टियों के बस्ता पर मतदाताओं की भीड़ रही। जबकि अन्य बूथ पर कम लोग मतदान करने के लिए आते रहे। सुबह से शाम तक केवल 50 फीसदी मतदान हुआ।

करहेड़ा में करीब 13 हजार मतदाता हैं, इनमें से 4 हजार से अधिक ठाकुर हैं। इनके लिए अर्थला स्थित कंपोजिट विद्यालय में बूथ संख्या 854-860, श्री चैतन्या टेक्नो स्कूल में बूथ संख्या 848-852 और गुलमोहर ग्रीन सोसायटी में बूथ संख्या 853 बनाया गया था। सुबह के समय दिल्ली में नौकरी करने वाले मतदाता अपना-अपना मतदान करके नौकरी पर चले गए। इसके बाद सुबह नौ बजे से महिलाएं और बुजुर्ग मतदान करने के लिए समय-समय पर बूथ पर आते रहे। सुबह 10 बजे से कंपोजिट विद्यालय सहित अन्य बूथ पर सन्नाटा पसरा रहा। जबकि स्कूल परिसर के राजीव कॉलोनी और सेवियर पार्क सोसायटी के बूथ पर मतदाताओं की भीड़ रही। कई मतदाता बूथ बदल जाने की वजह से मतदेय स्थल पर नहीं पहुंच सकें। जबकि पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा मतदाताओं को बूथ तक छोड़ने के लिए वाहन लगाए गए थे। इसके बावजूद भी करहेड़ा के बूथ पर सन्नाटा पसरा रहा।

## नहीं मिली व्हीलचेयर, पिता को गोद में उठाकर ले गए बूथ पर

**साहिबाबाद।** सामान्य मतदान केंद्र हो या आदर्श प्रशासनिक अधिकारियों के दावे के बावजूद बुजुर्गों की मदद के लिए वालंटियर्स नहीं दिखे। कई जगह तो व्हील चेयर तक नहीं थे। बुजुर्ग अपने परिजनों के सहयोग से बूथ तक पहुंचे।

अर्थला के कैलाशवती इंटर कालेज में न तो कोई वालंटियर्स था और न ही कोई व्हीलचेयर। मतदान केंद्र पर अपने दो बेटों के कंधे के सहारे पहुंचे लाल ठाकुर को जब बूथ तक पहुंचने में दिक्कत हुई तो उनके बेटे ने उन्हें गोद में उठाकर बूथ तक लेकर पहुंचे। वहीं आदर्श बूथ खेतान पब्लिक स्कूल पर भी ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी। यहां बुजुर्ग दंपति या तो एक दूसरे के सहारे वॉकर के जरिये बूथ तक पहुंच रहे थे या फिर उनके बच्चे उन्हें सहारा देकर बूथ तक पहुंचा रहे थे। लोगों ने नाराजगी जताई कि जिला प्रशासन दावे तो तमाम सुविधाओं की करता है जबकि मौके पर कोई व्यवस्था नहीं मिलती।

**आदर्श बूथ के बाहर मतदाता पर्ची न पहुंचने पर कर्मचारियों से उलझे रिटायर्ड कर्मचारी**

आदर्श बूथ खेतान पब्लिक स्कूल के बाहर राजेंद्र नगर में एक रिटायर्ड सरकारी कर्मचारी मतदाता पर्ची न पहुंचने से मतदानकर्मी पर जमकर नाराजगी जाहिर की। बुजुर्ग ने कहा कि वह सेक्टर मजिस्ट्रेट तक रह चुके हैं लेकिन अब हालात बिल्कुल विपरीत हैं। मतदानकर्मी ईमानदार जिम्मेदारी नहीं निभाते। बुजुर्ग ने कहा कि उनके पते पर ऐसे लोगों की मतदाता पर्ची तो पहुंच जाती है जो उनके घर अब नहीं रहते, वहीं स्वयं उनकी मतदाता पर्ची नहीं पहुंचती। कुछ देर तक बुजुर्ग और महिला मतदान कर्मचारी के बीच आपसी झड़प हुई, जिसे बाद में कुछ लोगों ने बीच-बचाव कर मामले को शांत कराया।

## घटे मतदान से किसका नफा और किसका नुकसान

**गाजिबाबाद।** गाजियाबाद लोकसभा सीट पर इस बार पिछले चुनाव के मुकाबले पांच फीसदी कम मतदान हुआ है। अब लाख टके का सवाल यही है कि मतदान घटने से किसका नफा हुआ और किसका नुकसान ? सही जवाब तो चार जून को ही मिलेगा। लेकिन, इतना जरूर है कि इस बार मुकाबला कांटे का रहा। कांग्रेस की डॉली शर्मा ने अभेद माने जाने वाले भाजपा के किले की तगड़ी घेराबंदी की। अगर भाजपा अपनी जीत पक्की मानकर बेफिक्री से चुनाव लड़ती तो कहानी बदल सकती थी। लेकिन, राजनीति अगर मगर का खेल नहीं। यहां एक गलती हो जाए तो सुधार करने के लिए पांच साल इंतजार करना पड़ता है।

इस बार भाजपा ने क्षत्रिय को टिकट देने की परंपरा तोड़ी। पहली बार वैश्य कार्ड चला। चौंकाने वाले फैसले में चुनाव फंस जाने का डर था। लग रहा था कि नतीजों का ऊंट किसी भी करवट बैठ सकता है। लिहाजा बहुत पापड़ बेलने पड़े। आक्रामक प्रचार को हथियार बनाया। सीएम योगी से लेकर पीएम मोदी तक स्टार प्रचारकों की पूरी फौज उतारी। वक्त का तकाजा देख आरएसएस के स्वयंसेवकों ने भी पसीना बहाया। अगर एड़ी-चोटी का इतना जोर न लगाया गया होता तो राह और मुश्किल हो सकती थी।

20 साल से जीत के लिए तरस रही कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ने का पुराना अनुभव लेकर उतरीं डॉली शर्मा ने सोशल मीडिया पर हल्ला मचाने से लेकर सोशल इंजीनियरिंग के फार्मूले आजमाने तक में कोई कसर नहीं छोड़ी। अस्पताल, कॉलेज, गंगाजल, महिला सुरक्षा और ट्रैफिक जाम जैसे स्थानीय मुद्दों पर जनता के दिल में उतरने का प्रयास किया।

इन मुद्दों को भाजपा की राह के कांटे बनाने की चाल भी चली। अगर कांग्रेस का संगठन भाजपा की तरह मजबूत होता और बड़े नेता रैली-रोड शो करने के लिए आते तो चुनाव की कहानी कुछ और हो सकती थी। जिस जिले में नगर निगम से लेकर जिला पंचायत तक भगवा परचम लहरा रहा हो और सभी पांच सीट पर विधायक भी भाजपा के हों, वहां लड़ाई एक नहीं, कई मोर्चों पर एक साथ लड़नी होती है। इतना जरूर है कि पिछले चुनावों के मुकाबले इस बार डॉली को समर्थन ज्यादा मिलता नजर आया। यह समर्थन वोट में कितना बदला, इसका खुलासा चार जून को होगा।

बसपा ने पहले पंजाबी समाज के अंशय कालरा पर भरोसा जताया, फिर वीके सिंह को मैदान में न उतरता देख चाल बदल दी और क्षत्रिय समाज के नंद किशोर पुंडीर को टिकट दे दिया। पुंडीर एक ऐसी गलती कर बैठे जिसका जवाब देते न बना। उनकी पत्नी और भतीजे ने भी नामांकन कर दिया। समय रहते दोनों ने पर्चा वापस भी नहीं लिया। उनकी रणनीति दलित और ठाकुर समीकरण बनाने की रही लेकिन इसमें पूरी तरह सफलता मिलती नहीं दिखी। न दलित एकजुट हुए और ठाकुर एकतरफा चले। यह पहला मौका था जब बसपा ने दलित-ठाकुर समीकरण बनाया। इससे पहले यहां पार्टी के उम्मीदवार मुस्लिम और ब्राह्मण समाज से रहे।

# गाजियाबाद लोकसभा चुनाव 2024 में हुई चुनावी धांधली से उपजते तल्ख सवाल मांग रहे दो टूक जवाब

**उत्तरप्रदेश में दूसरे चरण के मतदान के दौरान इंडिया गठबंधन की कांग्रेस प्रत्याशी डॉली शर्मा, एमबीए ने ट्वीट करते हुए कहा कि गाजियाबाद लोकसभा क्षेत्र में शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष चुनाव करवाने में केंद्रीय चुनाव आयोग विफल रहा है।**

कमलेश पांडे

लोकतंत्र का महापर्व चुनाव होता है, लेकिन जब चुनाव में ही धांधली हो जाए और प्रशासनिक अमला हाथ पर हाथ धरा बैठा नजर आए, तो फिर कहा किससे जाए, यक्ष प्रश्न है! इतना ही नहीं, यदि प्रशासन के कुछ खास लोग ही सत्तापक्ष से मिले हुए प्रतीत हों, जैसे कि खुलेआम आरोप सोशल मीडिया पेजों पर चस्पां हुए, तो फिर कहने को कुछ शेष नहीं रह जाता है। ऐसे में गाजियाबाद लोकसभा चुनाव 2024 में हुई चुनावी धांधली से उपजते सवाल का जवाब अवाम अवश्य चाहेगी, क्योंकि उसके जनादेश का गला घोंटने का जो दुस्साहस किया गया है, उसे अनुत्तरित नहीं छोड़ा जा सकता।

मसलन, उत्तरप्रदेश में दूसरे चरण के मतदान के दौरान इंडिया गठबंधन की कांग्रेस प्रत्याशी डॉली शर्मा, एमबीए ने ट्वीट करते हुए कहा कि गाजियाबाद लोकसभा क्षेत्र में शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष चुनाव करवाने में केंद्रीय चुनाव आयोग विफल रहा है। उनके कहने का तातपर्य यह है कि जब केंद्र और राज्य में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के लोगों के इशारे पर ही स्थानीय प्रशासन और उससे जुड़े लोगों को कार्य करना है, तो फिर कहने को कुछ शेष नहीं रह जाता है!

पहला, डॉली शर्मा ने माइक्रो ब्लॉगिंग साइट एक्स (ट्वीटर) पर लिखा है कि सूर्यनगर इलाके में भाजपा ने सुबह हमारी टेबल हटा दी। फिर से टेबल लगी, लेकिन ये लोग बार बार झंडे हटा देते हैं। ये क्या गुंडागर्दी नहीं है? अपने ट्वीट में उन्होंने केंद्रीय चुनाव आयोग के उच्चाधिकारियों को टैग करते हुए लिखा कि मैं इलेक्शन कमीशन से कहना चाहती हूं कि कृपया शांतिपूर्ण व निष्पक्ष चुनाव हो, उसका इंतजाम किया जाए। क्योंकि भाजपा लगातार जिस तरीके से धांधली कर रही है, बीएलओ से पर्चियां छीनी गई हैं और वो भाजपा प्रत्याशी के लिफाफे में डालकर भेजी जा रही हैं, वह अपने आप में एक गम्भीर सवाल खड़ा करता है?

दूसरा, डॉली शर्मा ने आगे एक्स (ट्वीटर) पर एक वीडियो टैग करते हुए लिखा है कि ब्रिजविहार डीएवी स्कूल पर प्रतिक्रिया देखिए। भाजपा ने बीएलओ से पर्चियां छीनकर अपनी जेबों में रखी है। उन्होंने सवालिया लहजे में पूछा है कि @ECISVEEP ये कौन सा चुनाव है? इस वीडियो में एक व्यक्ति बोल रहा है कि जातिविशेष व सम्प्रदाय विशेष के इलाकों में बीएलओ ने पर्चियां बांटी ही नहीं, बल्कि भाजपा कार्यकर्ताओं को बांटने के लिए दे दी, जिन्होंने अपने मनमाफिक कार्य किया। यह प्रशासनिक मिलीभगत का नतीजा नहीं तो क्या है? क्योंकि इससे कांग्रेस और इंडिया गठबंधन समर्थक वोट देने ही नहीं निकले, क्योंकि उनके पास पर्चियां ही नहीं थीं।

तीसरा, डॉली शर्मा ने @ECISVEEP को टैग करते हुए आगे लिखा है कि 2 घण्टे से बूथ संख्या 335 गाजियाबाद लोकसभा के नाहल में 2 घण्टे से मशीन बन्द है, हर जगह मुस्लिम इलाकों में वोटिंग स्लो कर रखी है, वोटरों को धमकाया जा रहा है। उनकी इन टिप्पणियों पर उनके समर्थकों ने कहा है कि इससे केंद्रीय चुनाव आयोग की साख पर बट्टा नहीं तो क्या लगेगा, आप समझदार हैं!

चतुर्थ, कांग्रेस उम्मीदवार डॉली शर्मा ने आगे आरोप लगाया कि भाजपा की तानाशाही चरम पर है। मुस्लिम इलाकों में वोटिंग रोककर और लाइट काटकर वोटिंग को बाधित करने का लगातार प्रयास किया गया। यह साजिश नहीं तो क्या है? उन्होंने अपने माइक्रो ब्लॉगिंग साइट 'एक्स' और 'फेसबुक' पर @ECISVEEP और #Ghaziabad को टैग करते हुए उपर्युक्त बातें लिखी हैं।

पंचम, उन्होंने @dm_ghaziabad @ECISVEEP मुरादनगर #Ghaziabad को टैग करते हुए लिखा कि मुरादनगर विधानसभा क्षेत्र में बूथ नम्बर-119 से 123 तक वोट डाली जा रही है, लेकिन हमारे एजेंट्स बाहर कर दिए गए हैं। आखिर ये क्या हो रहा है? लोकतंत्र की हत्या है सीधी की सीधी!

छठा, शहीद नगर में दौनाराम स्कूल और एकता स्कूल पर 4 बजे से लाइट नहीं है। कृपया ध्यान दीजिए। आखिर किसके आदेशों से ऐसा हो रहा है। वहीं, हर एक घण्टे में साहिबाबाद इलाके में शहीदनगर में विकास मॉडर्न स्कूल की लाइट काटी जा रही है। @ECISVEEP ऐसा क्यों? क्या इसी को फ्री एंड फेयर इलेक्शन कहते हैं?

सातवां, सरदार पटेल स्कूल, विजय नगर में 45 मिनट से मशीन बन्द है और बूथ पर फर्जी वोट डाली जा रही है। लेकिन @ECISVEEP आपके सहायक रिटर्निंग ऑफिसर फोन नहीं उठा रहे हैं। भाजपा अब खुलकर चोरी कर रही है। वहीं, बूथ नम्बर- 425 कंपोजिट विद्यालय डासना गेट, गाजियाबाद में वहां के चुनाव कर्मी वोट नहीं डालने दे रहे हैं। सुबह में यहां मशीन 1 घण्टे तक बन्द रही। @ECISVEEP कुछ कीजिए। यहां पर लोगों ने डॉली शर्मा को बताया कि भाजपा के एजेंट बूथ के अंदर हैं, मतदान अधिकारी मतदाताओं से अभद्र भाषा में बात कर रहे हैं, उनके साथ बदतमीजी की जा रही है। वहीं महिला पुलिस महिलाओं को भगा रही है।

आठवां, डॉली शर्मा के द्वारा लगातार किये गए ट्वीट और सोशल मीडिया पोस्ट के बारे में लोगों का कहना है कि गाजियाबाद लोकसभा क्षेत्र का जनसमूह अब डॉली शर्मा के साथ हो चुका है, लिहाजा इंडिया गठबंधन की सफलता से भाजपा घबरा गई है। ये बातें तो महज बानगी भर हैं, लेकिन पांचों विधानसभाओं में डॉली शर्मा के समर्थक मतदाताओं के खिलाफ राजनीतिक व प्रशासनिक कुचक्र जारी रहा, जो शांतिपूर्ण व निष्पक्ष चुनाव का दावा करने वाली एजेंसियों की कलई खोल देने को काफी है।

नवम, आलम यह है कि लोकसभा प्रत्याशी डॉली शर्मा व उनके समर्थकों की शिकायतों को भी नजरअंदाज किया जाना आम बात है। इससे स्थानीय लोगों में गहरा आक्रोश है, जो चुनाव बाद कभी भी फूट सकता है। उनके समर्थकों का साफ कहना है कि यदि प्रशासनिक धांधली से हमारी सुनिश्चित विजय को पराजय में बदलने की कोशिश की गई तो सबूत सहित कोर्ट तक इस विषय को पहुंचाया जाएगा, लेकिन मदमस्त सत्ता के नापाक मंसूबों को कामयाब नहीं होने दिया जाएगा।

दशम, यह सब तब हुआ जब डॉली शर्मा ने चुनाव आयोग को इस बारे में पहले ही आगाह कर दिया था, बावजूद इसके प्रशासनिक लापरवाही और पक्षपात सामने आया! उन्होंने कहा कि गाजियाबाद में इंडिया गठबंधन की सुनामी चल रही है, जिसे प्रशासनिक तिकड़मों से रोका नहीं जा सकता है। हमारे कार्यकर्ता धैर्य और संयम पूर्वक अपना काम कर रहे हैं, क्योंकि वो हमारी जीत के प्रति आश्वस्त हैं। हां, प्रशासनिक धांधली व पक्षपात से जीत का अंतर थोड़ा कम हो सकता है। लेकिन प्रशासनिक पक्षपात के खिलाफ विधिसम्मत लड़ाई आगे भी लड़ी जाएगी।

ग्यारह, इंडिया गठबन्धन की कांग्रेस प्रत्याशी डॉली शर्मा ने कहा कि चुनाव आयोग के मातहत कार्यरत प्रशासन का आज यानी मतदान के दिन की गतिविधियां देखकर उस पर कोई भरोसा नहीं रहा। इसलिए उन्होंने सभी पोलिंग एजेंट्स से अनुरोध किया कि अपने-अपने बूथों की ईवीएम मशीनें सील करवाकर ही उठें और बसों के पीछे मंडी तक जाएं। वो खुद देर शाम अपनी टीम के साथ गोविंदपुरम अनाज मंडी पहुंचीं और अपनी देखरेख में सभी ईवीएम को सीलबंद करवाया।

बारह, बताया जाता है कि भगवा किले में इंडिया गठबंधन की कांग्रेस प्रत्याशी डॉली शर्मा द्वारा जबर्दस्त सेंधमारी किये जाने से घबराई मोदी सरकार ने अपने 'भरोसेमंद अधिकारियों' के मार्फ़त अपनी मातहत योगी सरकार की ऐसी नकेल कसी कि केंद्रीय चुनाव आयोग के अधीन कार्यरत गाजियाबाद प्रशासन के कतिपय लोग भी गत 26 अप्रैल 2024 को मतदान के दिन 'चुनावी कदाचार' पर उतर आए और जगह जगह पर डॉली शर्मा के समर्थक मतदाताओं को हतोत्साहित किया।

तरह, आलम यह रहा कि डॉली शर्मा के समर्थकों को मतदान केंद्रों पर न केवल रोका और धमकाया गया, बल्कि ईवीएम में गड़बड़ी पैदा करके मतदान की प्रक्रिया को बाधित करने की कोशिश की गई। दो टूक शब्दों में कहूँ तो इंडिया गठबंधन की प्रत्याशी डॉली शर्मा की सियासी सुनामी को रोकने के लिए कहीं ईवीएम किया बन्द गया तो कहीं समर्थक वोटरों से बदसुलूकी की गई, जो भारतीय लोकतंत्र की सफलता पर सवालिया निशान लगाने को काफी है।

चौदह, इन बातों से स्पष्ट होता है कि कहीं न कहीं चुनाव आयोग भी अपनी जिम्मेदारियों के निर्वहन में घोर लापरवाही बरतता पाया गया, क्योंकि बहुधा शिकायत पर त्वरित कार्रवाई महसूस नहीं की गई। खास बात यह कि जिन चुनावी कदाचार की आशंका डॉली शर्मा पहले ही व्यक्त कर चुकी थीं, उसे रोकने के माकूल उपाय नहीं किया जाना घोर प्रशासनिक लापरवाही नहीं तो क्या है? यही वजह है कि इंडिया गठबंधन की कांग्रेस प्रत्याशी डॉली शर्मा ने चुनावी धांधली का आरोप लगाया और कहा कि स्थानीय प्रशासन, भाजपा के इशारे पर कार्य कर रहा है, लेकिन इसे रोकने में चुनाव आयोग विफल रहा है।

जाहिर है, गाजियाबाद में लोकतंत्र की हत्या हुई है, इसलिए फ्री एंड फेयर इलेक्शन पर सवाल उठना लाजिमी है। हमारे प्रशासनिक हुक्मरानों को यह सोचना चाहिए कि सियासी दांव-प्रतिदांव में उनके सहयोगियों के पार्टी बनने से क्या लोकतंत्र की भावना कलुषित नहीं होगी? क्या स्थायी कार्यपालिका के पीछे जो संवैधानिक उद्देश्य अंतर्निहित है, वह ऐसे माहौल में पूरा हो पाएगा। जवाब होगा, शायद नहीं!

अब उम्मीदवार की समझदारी इसी बात में है कि ऐसे चुनिंदे मामलों में प्रशासनिक अधिकारियों से बहस करने के बजाय उन्हें कोर्ट में बेनकाब करके अपना हक पाया जाए। हालांकि, इसके लिए और अधिक पुख्ता सबूत जुटाने होंगे।

# किफायती दाम में चाहिए बेहतरीन डेली कम्यूटर? इस बाइक पर कर सकते हैं भरोसा

परिवहन विशेष न्यूज

**Honda Shine 100 में एक बेसिक एनालॉग इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर मिलता है जिसमें स्पीडोमीटर ओडोमीटर ट्रिप मीटर फ्यूल गेज और टेल-टेल लाइट्स के लिए रीड-आउट उपलब्ध है। Honda Shine 100 नए डायमंड फ्रेम पर आधारित है। आप इसे 5 कलर ऑप्शन में खरीद सकते हैं। सभी वेरिएंट में बेस कलर ब्लैक है। हालांकि स्टिकर को रेड ब्लू ग्रीन गोल्डन और ग्रे कलर ऑप्शन मिलता है।**

**नई दिल्ली।** होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया (HMSI) ने भारतीय बाजार में एक साल पहले Honda Shine 100 को लॉन्च किया था। केवल 64,900 रुपये (एक्स शोरूम, दिल्ली) में उपलब्ध इस किफायती बाइक ने कम्यूटर सेगमेंट में गेम चेंजर का काम किया है।

पिछले कुछ दिनों से हम इस बाइक को चला रहे हैं। Honda की Shine 100 चलाने में कैसी है और यह अपने प्रतिस्पर्धियों से कितनी अलग है? आइए, जान लेते हैं।

**डिजाइन और डायमेंशन**

डिजाइन के मामले में ये बाइक आपको ज्यादा आकर्षित नहीं करेगी, क्योंकि कंपनी ने इसे एक किफायती कम्यूटर बाइक के रूप में डेवलप किया है। इसका लुक पूरी तरह से Honda Shine 125 से इंस्पायर्ड है।

इसे एंगुलर हैलोजन हेडलैंप, आकर्षक बॉडी ग्राफिक्स और फाइव-स्पोक अलॉय व्हील दिए गए हैं। 99 किलोग्राम वजन वाली ये बाइक डेली कम्यूटिंग के लिए बेहतर ऑप्शन है। इसे 677 मिमी लंबी सीट मिलती है, जिसकी हाइट 786 मिमी है।

**फीचर्स और कलर ऑप्शन**

Honda Shine 100 में एक बेसिक एनालॉग इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर मिलता है, जिसमें स्पीडोमीटर, ओडोमीटर, ट्रिप मीटर, फ्यूल गेज और टेल-टेल लाइट्स के लिए रीड-आउट उपलब्ध है। Honda Shine 100 नए डायमंड फ्रेम पर आधारित है।

इसमें टेलिस्कोपिक फ्रंट फोर्क्स और रियर में डुअल स्प्रिंग-लोडेड शॉक एब्जॉर्बर मिलते हैं। ब्रेकिंग ड्यूटी के लिए इसे सामने 130 मिमी ड्रम यूनिट और पीछे 110 मिमी ड्रम ब्रेक दिए गए हैं। इसे स्टैंडर्ड रूप से कंबाइंड ब्रेकिंग सिस्टम (CBS) दिया गया है।

आप इसे 5 कलर ऑप्शन में खरीद सकते हैं। सभी वेरिएंट में बेस कलर ब्लैक है, जबकि स्टिकर को रेड, ब्लू, ग्रीन, गोल्डन और ग्रे कलर ऑप्शन मिलता है, जो इसे डुअल-टोन अपील देते हैं।

**इंजन और परफॉरमेंस**

Honda Shine 100 को 98.98cc क्षमता वाला सिंगल-सिलेंडर, एयर-कूल्ड, फ्यूल-इंजेक्टेड इंजन दिया गया है। ये पावरट्रेन 7500 RPM पर 7.28 bhp और 5,000 RPM पर 8.05 Nm का पीक टॉर्क पैदा करता है। इंजन 4-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स के साथ आता है। ये नवीनतम OBD-2 नॉर्म्स के साथ E-20 फ्यूल पर चलती है।

प्रदर्शन की बात करें, तो Honda Shine 100 बेहतरीन शुरुआती पिक-अप प्रदान करती है, जो सिटी राइडिंग के लिहाज से काफी बेहतर है। होंडा का ये नया इंजन काफी स्मूथ और रिफाइन है। इसके अलावा, गाड़ी का क्लच काफी लाइट है और इसमें गियरशिफ्ट करना भी बहुत आसान है।

100 सीसी इंजन होने की वजह से ये बहुत जल्दी गियर शिफ्टिंग मांगती है। ये बाइक 60 KMPH के स्पीड पकड़ने के बाद हल्का वाइब्रेशन भी महसूस करेंगे। माइलेज की बात करें, तो ये एक लीटर पेट्रोल में 60 से 65 किलोमीटर तक आसानी से चली जाती है।

**हमारा फैसला**

Honda Shine 100 एक किफायती कम्यूटर मोटरसाइकिल है। सभी बेसिक फीचर्स से लैस ये 100 सीसी बाइक काफी खूबसूरत दिखती है। अगर आप कम कीमत में एक बेहतरीन फ्यूल एफिशियंशी वाली बाइक तलाश रहे हैं, तो ये शाइन 100 आपके लिए बढ़िया विकल्प है।

# इलेक्ट्रिक सनरूफ के साथ बेहद कम दाम में आती हैं ये एसयूवी, कीमत 8 लाख से शुरू

**हुंडई एक्सटर के एसएक्स वेरिएंट से सनरूफ मिलता है जिसकी कीमत 8 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) से शुरू होती है। इस वजह से हुंडई एक्सटर सनरूफ फीचर के साथ आने वाली देश की सबसे किफायती एसयूवी है। इसके अलावा भी बाजार में कई किफायती विकल्प मौजूद हैं। आइए इंडियन मार्केट में मौजूद Affordable Sunroof Cars के बारे में जान लेते हैं।**

**नई दिल्ली।** मौजूदा समय में इलेक्ट्रिक सनरूफ का क्रेज है। नई गाड़ी खरीदते समय अधिकतर लोग किफायती दामों में सनरूफ फीचर के साथ आने वाली कार खरीदना पसंद करते हैं। आइए, इंडियन मार्केट में मौजूद ऐसी ही अफोर्डेबल कारों के बारे में जान लेते हैं।

**Hyundai Exter**

Hyundai Exter के एसएक्स वेरिएंट से सनरूफ मिलता है, जिसकी कीमत 8 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) से शुरू होती है। इस वजह से हुंडई एक्सटर सनरूफ फीचर के साथ आने वाली देश की सबसे किफायती एसयूवी है।

**Tata Punch**

टाटा पंच को हाल ही में इलेक्ट्रिक सनरूफ के साथ अपडेट किया गया था, जो कि एक्मप्लिश्ड एस वेरिएंट से उपलब्ध है। इसकी कीमतें 8.25 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) से शुरू होती हैं।

**Mahindra XUV300**

महिंद्रा एक्सयूवी300 को भी हाल ही में दो नए वेरिएंट के साथ अपडेट किया गया था। सनरूफ अब इसके W4 वेरिएंट से उपलब्ध है, जिसकी बेस कीमत 8.41 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है।

**Tata Nexon**

Tata Nexon में XM (S) वेरिएंट से इलेक्ट्रिक सनरूफ मिलता है, जिसकी शुरुआती कीमत 9.6 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है।

**Kia Sonet**

किआ सोनेट के एचटीके प्लस टर्बो आईएमटी वेरिएंट से सनरूफ मिलना शुरू होता है, जिसका बेस प्राइस 10.49 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है।

**Hyundai Venue**

किआ सोनेट की सिब्लिंग हुंडई वेन्यू को एसएक्स वेरिएंट और उससे ऊपर के वर्जन में सनरूफ मिलता है, जिसकी शुरुआती कीमत 10.93 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है।

**Maruti Suzuki Brezza**

मारुति सुजुकी ब्रेजा को टॉप-एंड ZXI ट्रिम लेवल पर सनरूफ के साथ पेश किया गया है, जिसकी शुरुआती कीमत 11.04 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है।

**Hyundai Venue N Line**

हुंडई वेन्यू के स्पोर्टियर एन लाइन वर्जन में एक इलेक्ट्रिक सनरूफ भी मिलता है, जो दो ट्रिम लेवल्स पर स्टैंडर्ड रूप से पेश किया जाता है। सब-4 मीटर एसयूवी की कीमत 12.67 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) से शुरू होती है।

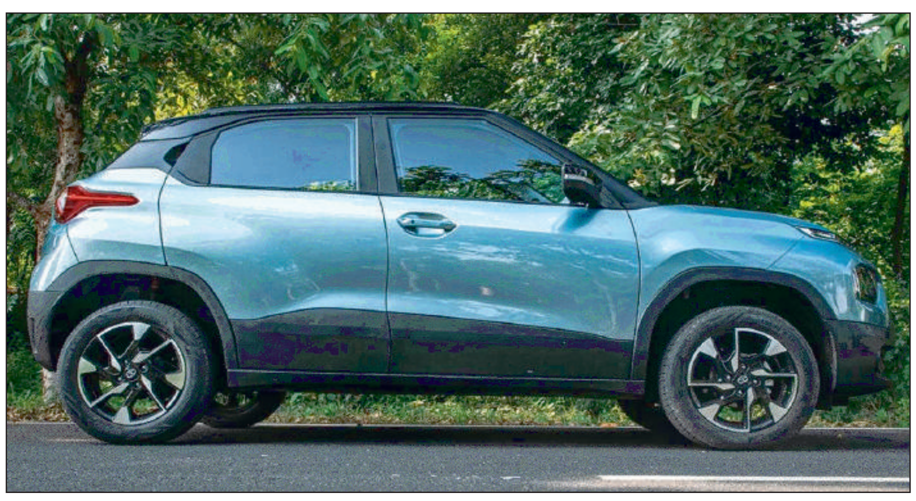

# 2024 टाटा एल्ट्रॉज टेस्टिंग के दौरान हुई स्पॉट, नए अवतार में होंगे ये बड़े बदलाव

**Tata Motors की ओर से भारतीय बाजार में Altroz Racer लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। उम्मीद है कि टाटा मोटर्स नई नेक्सॉन से लेकर अल्ट्रोज में कुछ फीचर्स जोड़ेगी। इसमें इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर के लिए 26.03 सेमी की एक नई टीएफटी स्क्रीन हो सकती है। 2024 टाटा अल्ट्रोज के इंजन में कोई बदलाव नहीं होगा। इसे तीन इंजन विकल्पों के साथ पेश किया जाना जारी रहेगा।**

Photo courtesy: Facebook/Abhimanyu Komawar

**नई दिल्ली।** Tata Motors की ओर से भारतीय बाजार में Altroz Racer लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। हालांकि, ऐसा लगता है कि घरेलू निर्माता अल्ट्रोज को अपडेट करने पर भी काम कर रहा है, जो एक प्रीमियम हैचबैक है। 2024 Tata Altroz में कुछ जरूरी फीचर्स जुड़ने वाले हैं और इसे हाल ही में टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया गया।

**2024 Tata Altroz में क्या नया?**

उम्मीद है कि टाटा मोटर्स नई नेक्सॉन से लेकर अल्ट्रोज में कुछ फीचर्स जोड़ेगी। इसमें इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर के लिए 26.03 सेमी की एक नई टीएफटी स्क्रीन हो सकती है। फिलहाल, प्रीमियम हैचबैक सेमी-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर के साथ आती है, जिसमें एक एनालॉग स्पीडोमीटर और बाकी जानकारी के लिए एक स्क्रीन है।

**इंटीरियर और फीचर**

इसमें एक नया टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम भी हो सकता है, जो मौजूदा यूनिट से बड़ा होगा। संदर्भ के लिए, वर्तमान यूनिट कीमाप 17.78 सेमी है, जबकि नेक्सॉन की यूनिट का आकार 26.03 सेमी है। नया इंफोटेनमेंट सिस्टम अधिक फीचर्स और अधिक कनेक्टेड तकनीक से भी लैस है। इसमें वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो और एपल कारप्ले भी होगा।

**मैकेनिकल अपडेट**

2024 टाटा अल्ट्रोज के इंजन में कोई बदलाव नहीं होगा। इसे तीन इंजन विकल्पों के साथ पेश किया जाना जारी रहेगा। इसमें 1.2-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन, 1.2-लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन और 1.5-लीटर डीजल इंजन है। इसमें एक सीएनजी पावरट्रेन भी है, जो ग्राहकों को मिल सकता है।

टाटा मोटर्स ने ऑटो एक्सपो 2023 में अल्ट्रोज रेसर को पेश किया था, जिसके जल्द ही भारतीय बाजार में लॉन्च होने की उम्मीद है। इसका इंजन टाटा नेक्सॉन के साथ साझा किया जाएगा और पावर व टॉर्क आउटपुट 120 बीएचपी और 170 एनएम पर रेट होगा। गियरबॉक्स अभी इस्तेमाल की जा रही 5-स्पीड यूनिट के बजाय 6-स्पीड यूनिट होगा। अल्ट्रोज रेसर कुछ कॉस्मेटिक बदलावों के साथ भी आएगी।

# इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्ज करते समय रखें इन बातों का ध्यान, नहीं तो हो सकती है ये दिक्कतें

**अपनी इलेक्ट्रिक कार को अनावश्यक रूप से अलग-अलग चार्जिंग स्टेशन पर चार्ज करने से बचें। यह आपके ईवी को चार्ज करने का असुरक्षित तरीका है। ईवी को कभी भी चार्ज पर लगाकर लंबे समय तक ना छोड़ें। Electric Car को निर्धारित समय से ज्यादा न चार्ज करें। बारिश के दौरान खुले सार्वजनिक स्थानों पर चार्ज करते समय विशेष ख्याल रखें।**

**नईदिल्ली।** Electric Vehicles ने देश-विदेश में अपनी पर्यावरण अनुकूल प्रकृति, व्यावहारिकता और ग्रीनहाउस गैस एमीशन को कम करने की क्षमता के दम पर पॉपुलरिटी हासिल की है। हालांकि इनकी चार्जिंग को लेकर लोग अभी भी चिंतित रहते हैं। आइए उन बड़ी गलतियों के बारे में जान लेते हैं, चार्जिंग के दौरान जिनसे बचने की जरूरत है।

**चार्जिंग स्टेशन बदलना**

अपनी इलेक्ट्रिक कार को अनावश्यक रूप से अलग-अलग चार्जिंग स्टेशन पर चार्ज करने से बचें। यह आपके ईवी को चार्ज करने का असुरक्षित तरीका है। अपनी EV के लिए डेडिकेटेड चार्जर लगवाएं, क्योंकि यह विशेष रूप से आपकी कार के लिए डिजाइन किया जाएगा। अगर आपके पास डेडिकेटेड चार्जिंग स्टेशन नहीं है, तो आप एक स्टैंडर्ड एसी चार्जर का भी उपयोग कर सकते हैं।

इसके अलावा अपने चार्जिंग स्टेशन के आसपास के क्षेत्र को मलबे और ज्वलनशील पदार्थों से मुक्त रखें। इससे शॉर्ट सर्किट की स्थिति में आग लगने से बचाने में मदद मिलेगी।

**कार की ओवरचार्जिंग**

अपने ईवी को कभी भी चार्ज पर लगाकर लंबे समय तक ना छोड़ें। Electric Car को निर्धारित समय से ज्यादा न चार्ज करें। ओवरचार्जिंग से कार की बैटरी तो खराब हो ही सकती है, इसके अलावा शॉर्ट सर्किट और ओवरफ्लो के कारण आग लगने का खतरा भी बढ़ जाता है।

**वेट कंडीशन में चार्जिंग**

अपनी इलेक्ट्रिक कार को वेट कंडीशन में चार्ज करने से बचें। खासकर बारिश के दौरान खुले, सार्वजनिक स्थानों पर चार्ज करते समय इस चीज का ध्यान रखें। ऐसे मौसम में कार चार्ज करते समय सुनिश्चित करें कि चार्जर और पोर्ट सूखे हैं और किसी भी प्रकार की नमी के संपर्क में नहीं हैं।

# शेषन ने बदली थी अराजक चुनावों की तस्वीर

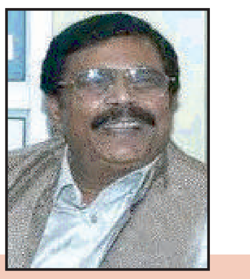

योगेंद्र योगी

**साल 1992 के शुरू से ही शेषन ने सरकारी अफसरों को उनकी गलतियों के लिए लताडना शुरू कर दिया था। उसमें केंद्र के सचिव और राज्यों के मुख्य सचिव भी शामिल थे। बीते दशकों में टीएन शेषन से ज्यादा नाम शायद ही किसी नौकरशाह ने कमाया हो'**

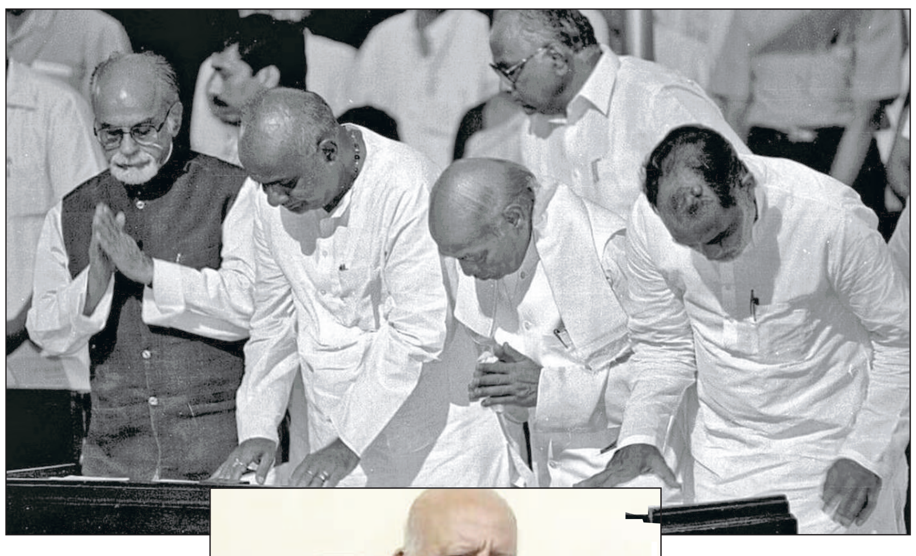

देश की मौजूदा पीढ़ी को शायद इस बात का अंदाजा भी नहीं होगा कि भारत की आजादी के बाद की ऊबड-खाबड़ यात्रा में देश ने ऐसे-ऐसे हिचकोले खाए कि लगने लगा था कि लोकतंत्र पटरी से उतर कर अराजकता में बदल जाएगा। इसी यात्रा में सबसे बड़ी चुनौती थी, देश के निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव सम्पन्न कराना। आज जिस तरह शांतिपूर्ण तरीके से चुनाव सम्पन्न कराए जा रहे हैं, करीब साढ़े तीन दशक पहले इसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। उस दौर में ऐसा कोई भी चुनाव नहीं रहा जो खून-खराबे से भरा नहीं रहा हो। देश में बैलट पर बुलेट भारी था। बंदूक की नोक पर वोटों की पेटियों को लूटना आम बात थी। भारत की चुनावी प्रक्रिया में हर तरह की बुराई थी। ऐसे में देश को एक ऐसा मुख्य चुनाव आयुक्त मिलता है, जो पूरी चुनाव व्यवस्था को बदलकर रख देता है। बड़े-बड़े दिग्गज नेताओं को नकेल कस देता है। उस मुख्य चुनाव आयुक्त का नाम है टीएन शेषन। आज अगर देश में निष्पक्ष और स्वतंत्र माहौल में चुनाव हो पाता है तो इसका श्रेय टीएन शेषन को जाता है। देश के दबंग चुनाव आयुक्त के तौर पर अपनी पहचान बनाने वाले शेषन नौकरशाही में भी सुधार के जनक थे।

ईमानदारी और कानून के प्रति अपनी निष्ठा की वजह से वह बहुतों को खटकते भी थे। इस वजह से उनके विरोधी उनको सनकी और तानाशाह तक भी कहते थे। लेकिन वह व्यवस्था में क्रांति लाने वाले इनसान, मेहनती, सक्षम प्रशासक, योग्य नौकरशाह, बुद्धीजीवियों और मध्य वर्ग के नायक थे। पलक्कड़ (केरल) के निवासी शेषन ने 1955 में भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में ट्रेनी के तौर पर अपने करियर की शुरुआत की। शेषन ने अपनी पहली तैनाती में ही तीखे तेवर दिखाते हुए तमिलनाडु के मदुरई जिले के डिंडीगुल में सब कलेक्टर पद पर रहते हुए हरिजन समुदाय के एक व्यक्ति पर फंड के घपले का आरोप में गिरफ्तार करवा दिया। मंत्री के दवाब के बाद भी आरोपी को नहीं छोड़ा। चेन्नई में यातायात आयुक्त पद के दौरान एक बार एक ड्राइवर ने शेषन से पूछा कि अगर आप बस के इंजन को नहीं समझते और ये नहीं जानते कि बस को ड्राइव कैसे किया जाता है, तो आप ड्राइवरों की समस्याओं को कैसे समझ पाएंगे। शेषन ने इसको एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने न सिर्फ बस की ड्राइविंग सीखी बल्कि बस वर्कशॉप में भी काफी समय बिताया। एक बार उन्होंने बीच सडक़ पर ड्राइवर को रोक कर स्टेयरिंग संभाल लिया और यात्रियों से भरी बस को 80 किलोमीटर तक चलाया। शेषन का तमिलनाडु के मुख्यमंत्री से काफी झगड़ा हो गया, जिसके बाद वे प्रतिनियुक्ति पर दिल्ली आ गए और तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग के एक सदस्य के तौर पर उनकी नियुक्ति हुई। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के आग्रह पर पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के सचिव बन गए। सचिव के तौर पर उन्होंने टिहरी बांध और सरदार सरोवर बांध जैसी परियोजनाओं का विरोध किया। भले ही सरकार ने उनके विरोध को दरकिनार कर दिया और परियोजना पर काम को आगे बढ़ाया, लेकिन बांध के पर्यावरण पर पडऩे वाले प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया गया।

इसके साथ ही शेषन ने विभागों में नहीं कहने का रुझान शुरू किया। इस दौरान राजीव गांधी से उनकी नजदीकी बढ़ी। वहां से उनको आंतरिक सुरक्षा का सचिव बनाया गया। करीब 10 महीनों बाद उनको कैबिनेट सचिव बनाया गया। जब राजीव गांधी दिसंबर 1989 में चुनाव हार गए और प्रधानमंत्री नहीं रहे तो शेषन का ट्रांसफर योजना आयोग में कर दिया गया। शेषन के मुख्य चुनाव आयुक्त बनने की दास्तां भी कम दिलचस्प नहीं है। दिसंबर 1990 में केंद्रीय वाणिज्य मंत्री और शेषन के दोस्त सुब्रमण्यम स्वामी ने प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के दूत के तौर शेषन पर मुख्य चुनाव आयुक्त के पद की पेशकश की। शेषन इस प्रस्ताव से बहुत अधिक उत्साहित नहीं हुए थे, क्योंकि पहले ही कैबिनेट सचिव विनोद पांडे ने भी उन्हें ये प्रस्ताव दिया था। शेषन इस प्रस्ताव पर राजीव गांधी से मिले। राजीव गांधी ने शेषन को मुख्य चुनाव आयुक्त का पद स्वीकार करने के लिए अपनी सहमति दे दी। लेकिन वो इससे बहुत खुश नहीं थे। उन्होंने उन्हें छेड़ते हुए कहा कि वो दाढ़ी वाला शख्स (चंद्रशेखर) उस दिन को कोसेगा, जिस दिन उसने तुम्हें मुख्य चुनाव आयुक्त बनाने का फैसला किया था। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने साठ के दशक में तमिलनाडु में शेख को नजरबंद करवा दिया था।

शेषन उस समय मदुरै जिले के कलेक्टर थे। उनको जिम्मेदारी दी गई थी कि वो शेख द्वारा बाहर भेजे गए हर पत्र को पढ़ें। शेख ने डॉक्टर एस. राधाकृष्णन प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया के नाम पत्र लिखा। शेषन ने बिना डरे पत्र पढ़ लिया। शेख ने घोषणा की कि वो उनके साथ किए जा रहे खराब व्यवहार के विरोध में आमरण अनशन पर जाएंगे। शेषन ने कहा कि सर ये मेरा कत्तव्य है कि मैं आपकी हर जरूरत का ख्याल रखूं, मैं ये सुनिश्चित करूंगा कि कोई आपके सामने पानी का एक गिलास भी लेकर न आए। शहरी विकास मंत्रालय के संयुक्त सचिव के धर्मराजन त्रिपुरा में हो रहे चुनावों का पर्यवेक्षक का कार्य छोड़ कर थाइलैंड चले गए। इस पर दंडित करते हुए शेषन ने उनकी गोपनीय रिपोर्ट में विपरीत प्रविष्टि करने का फैसला किया। शेषन ने वर्ष 1993 में 17 पेज का आदेश जारी किया कि जब तक सरकार चुनाव आयोग की शक्तियों को मान्यता नही देती, तब तक देश में कोई भी चुनाव नहीं कराया जाएगा। आखिरकार सरकार को उनके सामने झुकना पड़ा। मौजूदा आदर्श आचार संहिता उसी आदेश का परिणाम है। शेषन के आने से पहले मुख्य चुनाव आयुक्त एक आज्ञाकारी नौकरशाह होता था जो वही करता था जो उस समय की सरकार चाहती थी। ये शेषन का ही बूता था कि उन्होंने चुनाव में पहचान पत्र का इस्तेमाल आवश्यक कर दिया। शेषन ने साफ कह दिया कि अगर मतदाता पहचान पत्र नहीं बनाए गए तो एक जनवरी 1995 के बाद भारत में कोई चुनाव नहीं कराए जाएंगे। शेषन के दौर में ही हिमाचल प्रदेश में चुनाव के दिन पंजाब के मंत्रियों के 18 बंदूकधारियों को राज्य की सीमा पार करते हुए धर दबोचा गया। उत्तर प्रदेश और बिहार सीमा पर तैनात नागालैंड पुलिस ने बिहार के विधायक पप्पू यादव को सीमा नहीं पार करने दी।

हिमाचल प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल गुलशेर अहमद को चुनाव आयोग द्वारा सतना का चुनाव स्थगित करने के बाद उन्हें अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा। गुलशेर अहमद पर आरोप था कि उन्होंने राज्यपाल पद पर रहते हुए अपने पुत्र के पक्ष में सतना चुनाव क्षेत्र में चुनाव प्रचार किया था। उसी तरह राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल बलिराम भगत को भी शेषन का कोपभाजन बनना पड़ा था, जब उन्होंने एक बिहारी अफसर को पुलिस का महानिदेशक बनाने की कोशिश की। शेषन ने बिहार में पहली बार चार चरणों में चुनाव करवाया और चारों बार चुनाव की तारीखें बदली गईं। यह बिहार के इतिहास का सबसे लंबा चुनाव था। शेषन ने आचार संहिता के उल्लंघन पर पश्चिम बंगाल की राज्यसभा सीट पर चुनाव नहीं होने दिया, जिसकी वजह से केंद्रीय मंत्री प्रणब मुखर्जी को अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा। पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु इतने नाराज हुए कि उन्होंने उन्हें पागल कुत्ता कह डाला। साल 1992 के शुरू से ही शेषन ने सरकारी अफसरों को उनकी गलतियों के लिए लताडना शुरू कर दिया था। उसमें केंद्र के सचिव और राज्यों के मुख्य सचिव भी शामिल थे। बीते दशकों में टीएन शेषन से ज्यादा नाम शायद ही किसी नौकरशाह ने कमाया हो। वर्ष 1990 के दशक में तो भारत में एक मजाक प्रचलित था कि भारतीय राजनेता सिर्फ दो चीजों से डरते हैं, एक खुदा और दूसरे टीएन शेषन से।

संपादक की कलम से

## आंतरिक लोकतंत्र के बागी

आम चुनाव, 2024 के संदर्भ में बागी उम्मीदवारों की भी चर्चा की जानी चाहिए। बागी उम्मीदवार किसी भी पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र के अभाव के संकेत होते हैं। राजनीतिक दल अपने ही नेताओं, प्रत्याशियों की राजनीतिक बगावत के कारण दोफाड़ तक हो जाते हैं। जनाधार विभाजित हो जाते हैं। काडर और समर्थक भी बंट जाते हैं, लेकिन कई बार यह बगावत अपरिहार्य लगती है। चुनाव लडऩे और सांसद, विधायक बनने की महत्वाकांक्षा औसत राजनीतिक कार्यकर्ता के भीतर होती है, नतीजतन लोकसभा चुनाव में भी 300 से अधिक बागी उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। यह आंकड़ा कम-ज्यादा भी हो सकता है, क्योंकि बागियों की अधिकृत सूचना चुनाव आयोग जारी नहीं करता। पार्टियों में बागी चेहरे तभी सामने आते हैं, जब पार्टियों की चुनाव समिति किसी और को उम्मीदवार घोषित करती है और कई बार स्थापित नेताओं और जनप्रतिनिधियों के भी टिकट काट दिए जाते हैं। भाजपा ने एक-तिहाई सांसदों को इस बार अधिकृत उम्मीदवार घोषित नहीं किया है, लेकिन पार्टी कर्नाटक की शिमोगा सीट को लेकर चिंतित है। कर्नाटक के प्रख्यात नेता येदियुरप्पा के पुत्र एवं प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विजयेन्द्र के सामने, शिमोगा सीट पर, के. एस. ईश्वरप्पा निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं।

कभी ईश्वरप्पा राज्य सरकार में उपमुख्यमंत्री एवं गृहमंत्री होते थे। वह आरएसएस के बहुत पुराने कार्यकर्ता रहे हैं। भाजपा ने उन्हें बदल कर विजयेन्द्र को अवसर देने का फैसला किया, लेकिन ईश्वरप्पा अचानक बागी हो गए। फिलहाल भाजपा नेतृत्व ने उन्हें 6 साल के लिए पार्टी से निलंबित कर दिया है। मौजू सवाल यह है कि ऐसे बागी उम्मीदवार के कारण भाजपा को चुनावी नुकसान हुआ, तो क्या होगा? एक-एक सांसद बेहद कीमती होते हैं, तभी 370 या 400 की संख्या तक पहुंचना संभव होगा। राजस्थान की बाड़मेर सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार रवीन्द्र भाटी की खूब चर्चा है। उन्होंने निर्दलीय ही विधानसभा चुनाव, 2023 जीता था, तो वह भाजपा के करीब आए थे, लेकिन चुनाव समिति ने कैलाश चौधरी को टिकट दे दिया। अब रवीन्द्र भाटी निर्दलीय ही व्यापक जन-समूह को आकर्षित कर रहे हैं। स्थानीय मुद्दों से जनमत तैयार कर रहे हैं। उन्हें चुनावी चंदा भी खूब मिल रहा है। राजस्थान की चुरू सीट पर भी भाजपा में बागी पैदा हुआ है। वहां से भाजपा के राहुल कस्वां सांसद चुने गए थे। पार्टी ने इस बार पैरालंपिक के स्वर्ण पदक विजेता भाला फेंक खिलाड़ी देवेन्द्र झाझरिया को अधिकृत उम्मीदवार बनाया, तो राहुल बागी होकर कांग्रेस में चले गए और कांग्रेस प्रत्याशी के तौर पर चुनाव लड़ रहे हैं। चुनाव नतीजे की भविष्यवाणी हम नहीं करते, लेकिन भाजपा को कुछ नुकसान जरूर हो सकता है। राजस्थान में ही कांग्रेस के कार्यकर्ता अपने ही गठबंधन नेता के खिलाफ अभियान क्यों चला रहे हैं। बांसवाड़ा-डूंगरपुर सीट 'इंडिया' गठबंधन के तहत बीएपी के हिस्से दी गई थी, लेकिन कांग्रेस के नाराज उम्मीदवार ने भी मैदान नहीं छोड़ा। अंजाम क्या होगा, सभी राजनीतिक विश्लेषक जानते हैं। महाराष्ट्र में अमरावती सीट पर 2019 में निर्दलीय उम्मीदवार नवनीत राणा जीती थी। इस बार भाजपा ने उन्हें अपना अधिकृत प्रत्याशी बना लिया। महायुति के स्थानीय नेता भी नाराज हैं और बागियों का उतरना भी तय है।

ऐसे बागियों की सूची लंबी है। बेशक पार्टियां बागी नेताओं को मनाती हैं। उन्हें नामांकन न भरने या उसे वापस लेने को पुचकारती हैं। पार्टी के भीतर कुछ देने का आश्वासन भी दिया जाता है। इस संदर्भ में सफलता-दर बहुत कम है। बागियों को इतने वोट तक मिल जाते हैं कि वे या तो जीत के फासले के करीब पहुंच जाते हैं अथवा अधिकृत प्रत्याशी को पराजित कर देते हैं।

चर्चा

## पुर्जे-पुर्जे शिकायत

धर्मपुर बस डिपो की चलती बस के टायर ही नहीं खुले, बल्कि पथ परिवहन निगम प्रबंधन की ढीली चूलें भी सामने आ गई हैं। लापरवाही का नजराना किसे मिला, यात्रियों को जो-बाल-बाल बच गए या चालक को- जो सारी नालायकी का जिम्मेदार बना दिया गया। अब अपनी जांच के ढीले पुर्जों को दुरुस्त करने की दृष्टि से एचआरटीसी प्रबंधन ने धर्मपुर बस डिपो के मुख्य व कार्यकारी मुख्य मैकेनिक निलंबित कर दिए, तो चालक संघ ने आंदोलन का शंखनाद करते हुए यह मांग कर डाली कि जांच के फंदे में आरएम और डीएम को भी निलंबन की सूची में डालें। आश्चर्य यह कि जिस बस को जोगिंद्रनगर से अमृतसर जाना था, उसकी चालन क्षमता व पुर्जों की उपयोगिता इतनी थी ही नहीं कि इसे डिपो से बाहर निकलने की अनुमति मिलती। वैसे जो सरकारी बसें सडक़ों पर तथाकथित रूप से चल रही हैं, उनमें कइयों की स्थिति धर्मपुर बस सरीखी ही है। आश्चर्य यह कि लंबे और अंतरराज्यीय बस रूटों पर भी सुरक्षित आवागमन की गारंटी नहीं। बेशक एचआरटीसी पर आज भी यात्रियों का भरोसा है और वे इसे ब्रांड हिमाचल की दृष्टि से अहमियत देते हैं, लेकिन वर्तमान स्थिति में सरकारी बसों की छवि जगह-जगह ब्रेकडाउन के कारण खराब हो रही है। यही वजह है कि प्रदेश के स्थानीय रूटों पर निजी बसों को यात्रियों की प्राथमिकता मिल रही है। वोल्वो बसों के संचालन में भी एचआरटीसी पिछड़ चुकी है, जबकि निजी क्षेत्र के कारण हिमाचल पर्यटकों को सुविधाजनक यात्रा के माध्यम से आकर्षित कर पा रहा है।

जाहिर है हिमाचल परिवहन निगम की बसें फिसड्डी साबित हो रही हैं, तो इसके अनेक कारण हैं और जिनके लिए काफी हद तक चालक, मैकेनिक, क्षेत्रीय एवं डिवीजनल मैनेजर ही दोषी नहीं ठहराए जा सकते। जब से सरकारी बसें राजनीतिक फैसलों का बोझ उठाने लगी हैं, इनकी प्रबंधकीय क्षमता के टायर पंक्चर होने लगे हैं। इसलिए धर्मपुर डिपो की बस के टायरों का किस्सा बता रहा है कि भीतर कंगाली का आलम है क्या। हिमाचल के 14 सार्वजनिक उपक्रमों के कुल 5143.46 करोड़ के घाटे में परिवहन निगम ने ही 1966.13 करोड़ गंवाए हैं। यह अजीब सी स्थिति है, जहां घाटा निरंतर बढ़ रहा है, लेकिन सियासी प्राथमिकताएं बेशर्मी से अपना रुतबा आजमा रही हैं। जो रूट होने नहीं चाहिएं, वहां खाली बसें दौड़ रही हैं। जहां बस डिपो होने नहीं चाहिएं, वहां लाभकारी डिपो से छीन कर राजनीतिक आत्म संतुष्टि की जा रही है। कांगड़ा, हमीरपुर, ऊना, मंडी व कुल्लू के निजी बस आपरेटरों से ही एचआरटीसी प्रबंधन की कला सीख ले, तो पता चल जाएगा कि एक बस चलाने के लिए कितना अर्थशास्त्र व अर्थगणित चाहिए। न्यू प्रेम बस सर्विस दर्जनों बसें चलाने के लिए डिपो जैसे नखरे तो नहीं उठाता। दूसरी ओर निजी वोल्वो बसों की बुकिंग व यात्री संबंध इस तरीके से बुने गए हैं कि राज्य के बाहर के आपरेटर लाखों कमा रहे हैं। आश्चर्य यह कि एचआरटीसी बस की सीट भले ही फटी हो, प्रबंधन के तौर तरीकों में साहबों के दफ्तर आलीशान व शानोशौकत को तसदीक करते अपना रुतबा बताते हैं। हैरत है कि प्रबंधन उस चालक को कठघरे में खड़ा कर रहा है, जिसने न बस खरीदी और न ही पुर्जे। उसका दायित्व साफ-सुथरी व अनुशासित ड्राइविंग से यात्रियों को गंतव्य तक पहुंचाना है। यह पुर्जे का घालमेल है और जहां जुगाड़ से गाडियां चल रही हैं। बस के टायर इसलिए खुले कि एचआरटीसी अब या तो जुगाड़ है या कबाड़ बन चुकी है। बेहतर है सरकारी उपक्रम अपने घाटे और संस्थागत बोझ घटाएं।

राजेंद्र मोहन शर्मा, पूर्व डीआईजी

# जमानत एक नियम, जेल एक अपवाद है

**न्यायालय को भी मुकद्दमों का ट्रायल निश्चित समय सीमा में निटपाने के लिए जिम्मेदार ठहराने की जरूरत है'**

संविधान की धारा 21 के अंतर्गत व्यक्तिगत जीवन व स्वतंत्रता का विशेष मौलिक अधिकार है, जो कि अपातकाल में भी समाप्त नहीं किया जा सकता। इसी तरह न्यायशात्र का भी यही सिद्धांत है कि जब तक किसी दोषी को सजा न हो जाए, तब तक उसे निर्दोष ही समझा जाना चाहिए। इसी सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता (अब नागरिक सुरक्षा संहिता) में दोषियों को जमानत दिए या न दिए जाने का प्रावधान रखा गया है। न्यायालय जमानत देते समय उसके कानून व व्यवस्था पर पडऩे वाले प्रभावों का पूर्ण अवलोकन करता है। यह बात ठीक है कि जमानत देना या न देना किसी न्यायाधीश के व्यक्तिगत विवेक पर भी निर्भर करता है। आखिर जमानत क्या है? किसी भी अपराधी को गिरफ्तारी से बचने के लिए न्यायालय के सामने कोई निश्चित धन राशि या सम्पत्ति जमा करवाने या फिर अमुक धन राशि को न्यायालय के दिशा निर्देशों की अवहेलना न करने के लिए एक ऐसा बांड/प्रतिज्ञा पत्र होता है जो अपराधी व उसकी जमानत देने वाले को लिख कर देना होता है तथा दी गई शर्तों के अनुसार उसे अपना व्यवहार सुनिश्चित करना होता है। सात वर्ष तक की सजा वाले अपराधों में पुलिस को ही जमानत लेने का अधिकार दे दिया गया है, मगर इसमें भी अपवाद की अवधारणा डाली गई है कि यदि पुलिस को लगे कि अपराधी फरार हो सकता है या फिर सहयोग नहीं करेगा, तो इन हलात में पुलिस अपने स्तर पर जमानत नहीं लेगी तथा न्यायालय द्वारा ही जमानत दी जा सकती है।

इस विवेक का पुलिस भी कई बार अनुचित लाभ उठा कर न्याय के साथ भद्दा मजाक करती रहती है। गंभीर प्रकार के अपराधों को गैर-जमानती बनाया गया है तथा आम तौर पर ऐसे अपराधों में जमानत नहीं दी जाती तथा दोषी अपने केस के ट्रायल के अंतिम निर्णय तक जेल के अंदर ही रहता है। इसी तरह यदि पुलिस किसी गैर जमानती मुकद्मे का 90 दिन में अन्वेषण पूर्ण करके चालान नहीं भेज देती तब संबंधित अपराधी को न्यायालय जमानत पर छोड़ सकता है। इसी तरह जब कोई व्यक्ति अपनी गिरफ्तारी की आशंका से ग्रसित होता है, तो वह सत्र न्यायालय या फिर उच्च न्यायालयों में जमानत की मांग कर सकता है। मगर जमानत देना या न देना न्यायाधीश के व्यक्तिगत/विवेक पर भी निर्भर करता है। यदि मामला गंभीर प्रवृत्ति का हो तो आम तौर पर अग्रिम जमानत नहीं दी जाती। गौरतलब है कि भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता के अंतर्गत विचाराधीन मुकद्मों की सुनवाई की कोई सीमा निश्चित नहीं की गई है, तथा परिणामस्वरूप विचाराधीन अपराधी कई बार बिना वजह से लंबे समय तक जेलों में अपने जीवन की अंतिम सांसें गिनते रहते हैं। पाया गया है कि वर्ष 2021-22 में भारत की जेलों में केवल 33 प्रतिशत कैदी ही ऐसे थे जिन्हें किसी अपराध में दोषी करार दिया गया था, जबकि 77 प्रतिशत कैदी ऐसे थे जो बिना सजा के ही जेलों में सड़ रहे थे। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2021 में 11490 ऐसे विचाराधीन अपराधियों को जेलों में रखा गया था, जो पिछले पांच वर्षों से भी अधिक समय तक न्याय का इंतजार कर रहे थे। इसी तरह वर्ष 2022 में कुल 573220 दोषी विभिन्न जेलों में थे जिनमें से 434302 विचाराधीन कैदी ही थे।

यह भी देखा गया है कि जिन कैदियों को सत्र न्यायाधीश से जमानत नहीं मिलती, वे उच्च या उच्चतम न्यायालय में गुहार लगा कर जमानत प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं, जिससे स्पष्ट है कि न्यायाधीश का व्यक्तिगत विवेक भी किसी की जमानत को निर्धारित करता है। दोषियों को न्यायिक हिरासत में भेजने के लिए पुलिस जांच एजेंसियां केवल यही गुहार लगाती हैं कि दोषी अपने पद का दुरुपयोग कर सकता है, गवाहों को डरा- धमका सकता है या फिर कई प्रकार के प्रलोभनों द्वारा आकर्षित कर सकता है। यहां पर सोचने की बात यह है कि क्या ट्रायल के समय दोषी के सगे संबंधी गवाहों को प्रभावित नहीं कर सकते? हां, वो ऐसा आराम से करते ही हैं तथा यही कारण है कि गवाहों के मुकर जाने से ही दोषी सजामुक्त हो जाते हैं। जमानत न देने से किसी कैदी को दोषी नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि उसे अपराधी तो एक ट्रायल के बाद ही ठहराया जा सकता है। अगर हम आर्थिक अपराधों में सजा की दर की बात करें तो यह केवल 32.6 प्रतिशत है। आखिर क्या कारण है कि ऐसे अपराध जो कि दस्तावेजों के साक्ष्यों पर आधारित होते हैं, उनमें भी अधिकतर दोषी सजा से मुक्त हो जाते हैं। पुलिस व न्यायालय दोषियों की जमानत रद्द करने-करवाने में ही लगे रहते हैं तथा पूरी न्यायिक प्रक्रिया को मजबूत करने की तरफ ध्यान नहीं दिया जाता। जमानत के समय तथ्यों की कोई विस्तृत पड़ताल करने की आवश्यकता नहीं होती। इस संबंध में उच्चतम न्यायालय ने संजय चंद्र बनाम सीबीआई (2012) वाले केस में कहा था कि जमानत का उद्देश्य न ही सजा देने का है और न ही कोई अपराध की रोकथाम करना है। यह तो केवल मुलजिम को पुलिस या न्यायालय में पूछताछ में शामिल होने के लिए केवल एक प्रतिज्ञापत्र है। एक समय था जब उच्चतम न्यायालय जमानत के संबंध में बहुत ही उदार था तथा जेल भेजने की बजाय बेल पर विश्वास किया जाता था। हां, ऐसे अपराध जिनका सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ता हो, के अतिरिक्त अन्य मामलों में जमानत हो ही जानी चाहिए।

यह भी देखा गया है कि एक ही जैसे अपराध को यदि सामान्य व्यक्ति या फिर विशेष व्यक्ति द्वारा किया गया हो तो विशेष व्यक्ति को जमानत नहीं दी जाती है, तथा यह कानून की नजरों में तो भेदभाव वाली ही बात है। आर्थिक अपराधों में कुछ विशेष परिस्थितियों के अतिरिक्त जमानत दिए जाने का प्रावधान उदार ही होना चाहिए, क्योंकि ऐसे मुकद्मों में तथ्य दस्तावेजों पर ही आधारित होते हैं तथा यदि फिर भी दोषी किसी प्रकार का हस्तक्षेप करता है, तब जांच एजेंसी उसकी जमानत रद करवा सकती है। वास्तव में न्यायालय को भी मुकद्मों का ट्रायल एक निश्चित समय सीमा के भीतर निटपाने के लिए जिम्मेदार ठहराने की जरूरत है, जो कि अब नए कानून, नागरिक सुरक्षा संहिता के अंतर्गत ऐसा प्रावधान किया भी गया है। पुलिस व अभियोजन पक्ष को लकीर का फकीर न बन कर किसी दोषी की जमानत रद्द करवाने के लिए वो ही घिसी-पिटी बातें लिख कर कि जमानत हो जाने पर गवाहों का डराया-धमकाया व प्रलोभित किया जा सकता है या फिर अपराधी भगौड़ा हो सकता है, इन सब बातों से ऊपर उठकर एक मानवीय व उदारवादी रुख अपनाना चाहिए। जमानत की राशि को तर्कसंगत आधार पर बढ़ाया जा सकता है।

# चलो नई गारंटी दी जाए

बाजारवाद का दौर है। पब्लिक एकदम नई चीज पसंद करती है। चाहे राजनीति हो, चाहे चाय पकौड़े की दुकान। राजनीति में कुछ नया दिखता है तो पब्लिक एकदम से दीवानी हो जाती है। पकौड़े की दुकान में कोई नई आइटम आ जाती है तो ग्राहक खिंचे चले आते हैं। अब चुनावों का मौसम है तो नई-नई गारंटियां दी जा रही हैं। पुरानी गारंटियां पब्लिक भूल रही हैं, इसलिए पुरानी गारंटियां कैंसिल हो रही हैं और नई गारंटियां ध्यान आकर्षित कर रही हैं। पब्लिक अब 10 गारंटियां भूल गई है। उसे इतना याद है कि गोबर खरीदने की बात हुई थी और गोबर के ढेर लगे हैं, लेकिन सरकार ने सत्ता में आने के बाद सब कुछ गुड गोबर कर दिया है। क्योंकि पार्टी के ही कुछ विधायक साथ छोड़ कर चले गए हैं और सरकार गुड़ बचाने में लगी है। गोबर की तरफ अभी ध्यान नहीं है। गोबर इक_ा वाले सरकार के खिलाफ कहीं मोर्चा न खोल दे, इसलिए नई गारंटियां चुनावी घोषणा पत्र में परोस दी गई हैं। इसमें रोजगार की बात नहीं है। महंगाई की बात नहीं है। पारदर्शी प्रशासन की बात नहीं है। स्वास्थ्य सुविधाओं की बात नहीं है। कानून व्यवस्था की बात नहीं है। सिर्फ एक ही वादा किया गया है कि जो बिक गए हैं, वह सलाखों के पीछे डाले जाएंगे। बिकने वाले क्यों बिक गए, इस पर घोषणा पत्र खामोश है। कुछ दल धर्म को भी घोषणा पत्र में घसीट कर ले आए हैं, ताकि पब्लिक को लगे कि अगर धर्म खतरे में हुआ तो देश भी खतरे में होगा। सबका अपना अपना एजेंडा है, लेकिन सबका एक ही फंडा है कि कैसे पब्लिक के वोट जुटाए जाएं और फिर कैसे पब्लिक को दरकिनार कर दिया जाए।

क्योंकि पब्लिक बीच में रहेगी तो सरकार को खतरा रहेगा। पब्लिक पूछती रहेगी कि वायदों का क्या हुआ और गारंटियां कहां गई। जो दूरदर्शी राजनीतिक दल होते हैं, वे पब्लिक को फालतू के मसलों में उलझा कर रखते हैं ताकि मतलब के मसले पर जनता का ध्यान न जाए। पब्लिक का ध्यान कहीं और होगा तो सत्तारूढ़ दल अपना ध्यान अपने निशाने पर केंद्रित कर सकेगा। लेकिन पब्लिक का ध्यान भटक गया तो सत्तारूढ़ दल का मिशन भी भटक जाएगा। खैर बात हो रही थी गारंटी की। इसलिए सत्तासीन दल ने डिसाइड किया था कि अब पुरानी गारंटियों से लोगों का ध्यान हटाने के लिए नई गारंटियां दी जाएंगी। इनमें चरणबद्ध ढंग से लोगों को चांद की सैर कराने का वायदा किया जाएगा ताकि चांद पर पहुंच कर लोग जब अपनी धरती को देखेंगे तो उन्हें चांद के विकास और अपनी धरती के डेवलपमेंट कार्यों पर तुलनात्मक अध्ययन करने का मौका मिलेगा। निश्चित रूप से चांद विकास के मामले में पीछे जाएगा। वहां पानी नहीं होगा, बिजली नहीं होगी, सडक़ें नहीं होंगी। इससे सत्तारूढ़ दल के नेताओं को यह प्रचार करने का मौका मिल जाएगा कि हम चांद से भी आगे हैं। कुछ नेता पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान का उदाहरण देकर कह सकेंगे कि हम उनसे आगे हैं।

पब्लिक इन बातों से बहुत खुश होती है। उन्हें लगता है कि चांद भी हमारी धरती के मुकाबले तरक्की में पीछे है और पाकिस्तान की तो लुटिया डूब रही है। इससे पब्लिक को गौरवान्वित होने का मौका मिलता है। पब्लिक गौरवान्वित होती रहे, इससे बढक़र चकाचक गारंटी और क्या हो सकती है। इसलिए यह गारंटी पब्लिक के बीच में आकर्षण का केंद्र बन रही है। चुनाव में कौन कितने में बिका, इस बारे पब्लिक फालतू में सोच कर अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहती। पब्लिक को लगता है कि बाजारवाद का दौर है। इसमें हाईकमान भी खरीदा जा सकता है। हाईकमान का मु_ी में होना किसी भी दल के नेता जी के लिए अपने करियर में आगे बढ़ाने की सबसे बड़ी गारंटी है। यही गारंटी सर्वोपरि है। नेताजी यही गारंटी दे रहे हैं। इसलिए उनका डंका बज रहा है। पब्लिक के बीच में यही मैसेज जा रहा है कि नेताजी की गारंटी पत्थर पर खींची लकीर होती है। नेताजी मानते हैं कि पब्लिक लकीर की फकीर होती है।

गुरमीत बेदी

# दिग्गज आईटी कंपनियों में 70 हजार घटी कर्मचारियों की संख्या, जानें क्या है

परिवहन विशेष न्यूज

भारत के आईटी सेवा क्षेत्र के राजस्व में धीमी वृद्धि के बीच देश की दिग्गज आईटी कंपनियों में बीते वित्त वर्ष के दौरान कर्मचारियों की संख्या में 70 हजार की कमी आई है। वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान इन्फोसिस टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) विप्रो और टेक महिंद्रा के कर्मचारियों में सबसे ज्यादा कमी दर्ज की गई है। सिर्फ एचसीएल टेक में कर्मचारियों की संख्या में बढ़ी है।

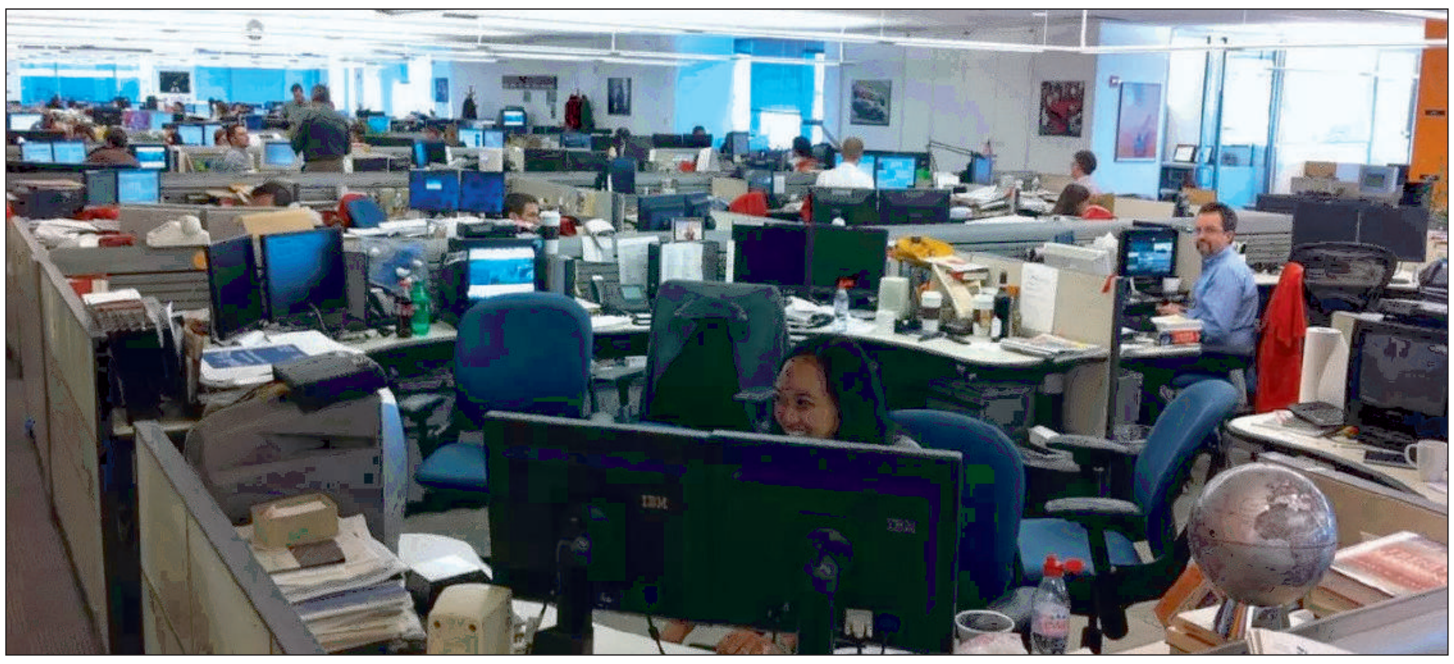

**नई दिल्ली।** वैश्विक चुनौतियों के बीच भारत के आईटी सेवा क्षेत्र के राजस्व में धीमी वृद्धि के बीच देश की दिग्गज आईटी कंपनियों में बीते वित्त वर्ष के दौरान कर्मचारियों की संख्या में 70 हजार की कमी आई है। वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान इन्फोसिस, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस), विप्रो और टेक महिंद्रा के कर्मचारियों में सबसे ज्यादा कमी दर्ज की गई है।

**सिर्फ HCL टेक में बढ़े कर्मचारी**

बीते वित्त वर्ष के दौरान इन्फोसिस के कर्मचारियों की संख्या में सबसे ज्यादा 25,994 की कमी आई है, जबकि टीसीएस के कर्मचारियों की संख्या 13,429 घटी है। एक अन्य आईटी कंपनी विप्रो के कर्मचारियों की संख्या में पूरे वित्त वर्ष के दौरान 24,516 की कमी आई है। इसी तरह टेक महिंद्रा के कर्मचारियों की संख्या 6,945 घटी है। हालांकि, इस दौरान एचसीएल टेक से कर्मचारियों की संख्या में 1,537 की वृद्धि हुई है।

**रेवेन्यू में सुस्ती है बड़ी वजह**

रेटिंग एजेंसी क्रिसिल रेटिंग्स की एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार, वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान भी आईटी सेवा क्षेत्र के राजस्व में वृद्धि लगातार दूसरे वर्ष भी धीमी रह सकती है और इस वर्ष क्षेत्र के राजस्व में 5-7 प्रतिशत की वृद्धि रह सकती है। रेवेन्यू में धीमी वृद्धि के चलते आइटी सेवा कंपनियों ने फ्रेशर्स को नौकरी देना बंद कर दिया है।

इसका नतीजा यह रहा कि दिसंबर 2023 में कर्मचारियों की संख्या में वार्षिक आधार पर चार प्रतिशत की कमी दर्ज की गई थी। क्रिसिल रेटिंग्स के निदेशक आदित्य झावेर का कहना है कि टेक्नोलॉजी खर्च में मंदी चालू वित्त वर्ष में भी जारी रहेगी। इसका असर आईटी सेवा प्रदाताओं की राजस्व वृद्धि पर पड़ेगा।'

# Q4 में 33 प्रतिशत बढ़ा बैंक का नेट प्रॉफिट, 353 करोड़ रुपये पहुंचा आंकड़ा

आरबीएल बैंक ने गैर-ब्याज आय के कारण मार्च तिमाही के लिए कर-पश्चात शुद्ध लाभ में 30 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 353 करोड़ रुपये की वृद्धि दर्ज की। महाराष्ट्र स्थित ऋणदाता ने एक साल पहले की अवधि में 271 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज किया था। इसकी मूल शुद्ध ब्याज आय 20 प्रतिशत ऋण वृद्धि पर 18 प्रतिशत बढ़कर 1600 करोड़ रुपये हो गई।

**मुंबई।** निजी क्षेत्र के ऋणदाता आरबीएल बैंक ने शनिवार को गैर-ब्याज आय के कारण मार्च तिमाही के लिए कर-पश्चात शुद्ध लाभ में 30 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 353 करोड़ रुपये की वृद्धि दर्ज की। महाराष्ट्र स्थित ऋणदाता ने एक साल पहले की अवधि में 271 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज किया था।

इसकी मूल शुद्ध ब्याज आय 20 प्रतिशत ऋण वृद्धि पर 18 प्रतिशत बढ़कर 1,600 करोड़ रुपये हो गई। हालांकि, यह शुद्ध ब्याज मार्जिन में कमी के कारण एक साल पहले के 5.62 प्रतिशत के मुकाबले 5.45 प्रतिशत तक सीमित था।

**आय में 30 प्रतिशत बढ़ोतरी**

समीक्षाधीन तिमाही के दौरान अन्य आय 30 प्रतिशत बढ़कर 875 करोड़ रुपये हो गई। इसके प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी आर सुब्रमण्यकुमार ने संवाददाताओं से कहा कि उन्हें लगता है कि आगे भी 20 प्रतिशत के दायरे में प्रगति जारी रहेगी। चुनौतीपूर्ण बाजार में भी जमा वृद्धि 22 प्रतिशत रही।

संपत्ति की गुणवत्ता के मोर्चे पर, कुल फिसलन एक साल पहले की अवधि के 0.44 प्रतिशत से बढ़कर संपत्ति का 0.56 प्रतिशत हो गई और यह माइक्रोलेंडिंग और असुरक्षित ऋणों द्वारा संचालित थी।

सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति अनुपात एक साल पहले की अवधि में 3.37 प्रतिशत से बढ़कर 2.65 प्रतिशत हो गया। कुल प्रावधान एक साल पहले की अवधि में 235 करोड़ रुपये के मुकाबले 414 करोड़ रुपये रहा।

31 मार्च तक कुल पूंजी पर्याप्तता अनुपात 16.18 प्रतिशत था, जिसमें कोर टियर-I अनुपात 14.38 प्रतिशत शामिल था।

# क्या फिर रुलाने वाली है प्याज? सरकार ने दी निर्यात की इजाजत

केंद्र सरकार ने पिछले कई महीनों से प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध लगा रखा था। लेकिन इसमें थोड़ी ढील दी गई है। सरकार ने 6 पड़ोसी देशों को प्याज निर्यात करने की अनुमति दे दी है। इससे पहले सरकार ने मध्य-पूर्व और कुछ यूरोपीय देशों को 2000 टन सफेद प्याज के निर्यात की भी इजाजत दी थी। आइए जानते हैं कि सरकार ने निर्यात में ढील क्यों दी है।

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** केंद्र सरकार ने पिछले कई महीनों से प्याज के निर्यात पर पाबंदी लगा रखी थी, ताकि देश में कीमतों को कम रखा जा सके। लेकिन, सरकार ने शनिवार को छह पड़ोसी देशों को 99,500 टन प्याज के निर्यात की अनुमति दे दी है। यह मुख्य तौर पर महाराष्ट्र की फसल है।

**किन देशों को होगा प्याज का निर्यात?**

उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने एक आधिकारिक बयान में कहा बताया कि सरकार ने छह पड़ोसी देशों- बांग्लादेश, यूएई, भूटान, बहरीन, मॉरीशस और श्रीलंका को 99,150 टन प्याज के निर्यात की इजाजत दी है।

इससे पहले केंद्र सरकार ने विशेष रूप से मध्य पूर्व और कुछ यूरोपीय देशों को 2,000 टन सफेद प्याज के निर्यात की भी अनुमति दी थी।

**प्याज के निर्यात पर क्यों लगा था प्रतिबंध?**

दरअसल, 2023-24 में पिछले साल के मुकाबले खरीफ और रबी फसलों की पैदावार घटने का अनुमान था। इसलिए सरकार ने पिछले साल दिसंबर में प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया दिया, ताकि घरेलू बाजार में इसकी पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। इससे कीमतों को कम रखने में भी मदद मिली।

सरकार ने उस वक्त बताया था कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्याज की डिमांड बढ़ गई है, जिसके चलते यह प्रतिबंध लगाया गया है।

**कितना रहेगा प्याज का उत्पादन**

कृषि मंत्रालय ने पिछले महीने प्याज उत्पादन के आंकड़े जारी किए थे। इसके मुताबिक, 2023-24 में प्याज की पैदावार करीब 254.73 लाख टन होने की उम्मीद है, जो पिछले साल 302.08 लाख टन थी। मंत्रालय ने बताया कि महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और राजस्थान में प्याज का उत्पादन कम हुआ है, जो पैदावार में गिरावट की बड़ी वजह है।

हालांकि, सरकार ने प्याज भंडारण तकनीक को बेहतर किया है। यही वजह है कि इस भंडारण क्षमता को 1,200 टन से बढ़ाकर 5,000 टन करने का फैसला किया है। सरकार ने दावा किया कि कोल्ड स्टोरेज के पायलट से प्याज के भंडारण में होने वाला नुकसान 10 प्रतिशत तक कम हुआ है।

# अमेरिका का रिपब्लिक फ र्स्ट बैंक डूबा, क्या फिर आने वाला है 2008 जैसा आर्थिक संकट?

परिवहन विशेष न्यूज

अमेरिका का रिपब्लिक फर्स्ट बैंक डूब गया है। अमेरिका के बैंकिंग रेगुलेटर फेडरल डिपॉजिट इंश्योरेंस कॉरपोरेशन (FDIC) ने रिपब्लिक फर्स्ट बैंक की संपत्तियां जब्त कर ली हैं। रिपब्लिक फर्स्ट बैंक 2024 में डूबने वाला पहला बैंक बन गया है। इससे पहले पिछले साल सिटीजन्स बैंक समेत पांच अमेरिकी बैंक डूब गए थे। आइए जानते हैं अमेरिका के बैंकिंग संकट की वजह।

**वॉशिंगटन।** अमेरिका के बैंकिंग सिस्टम में तनाव खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। अब अमेरिका का क्षेत्रीय बैंक- रिपब्लिक फर्स्ट बैंक डूब गया है। अमेरिका के बैंकिंग रेगुलेटर फेडरल डिपॉजिट इंश्योरेंस कॉरपोरेशन (FDIC) ने रिपब्लिक फर्स्ट बैंक की संपत्तियां जब्त कर ली हैं। रिपब्लिक फर्स्ट बैंक 2024 में डूबने वाला पहला बैंक बन गया है। इससे पहले पिछले वर्ष नवंबर में सिटीजन्स बैंक डूब गया था।

**फुल्टन बैंक संभालेगा जिम्मेदारी**

FDIC ने शुक्रवार को बताया कि 31 जनवरी 2024 को रिपब्लिक फर्स्ट बैंक की कुल परिसंपत्तियां करीब छह अरब डॉलर थी, जबकि बैंक में करीब चार अरब डॉलर की राशि जमा थी। रेगुलेटर ने बताया कि पेंसिलवेनिया का फुल्टन बैंक, रिपब्लिक फर्स्ट बैंक का संचालन शुरू करने और इसकी संपत्तियां व जमा खरीदने पर सहमत हो गया है। शनिवार को रिपब्लिक फर्स्ट बैंक की सभी 32 शाखाएं फुल्टन बैंक के तौर पर संचालित हुईं।

FDIC ने कहा कि रिपब्लिक फर्स्ट बैंक के जमाकर्ता चेक या एटीएम के जरिये लेनदेन कर सकते हैं। बैंक की इस विफलता से डिपॉजिट इंश्योरेंस फंड पर करीब 66.7 करोड़ डॉलर का बोझ पड़ेगा। रिपब्लिक फर्स्ट बैंक की अधिकांश शाखाएं न्यूजर्सी, पेंसिलवेनिया और न्यूयार्क में स्थित हैं।

**क्यों अमेरिका में बढ़ रहा जोखिम**

बढ़ती ब्याज दरों और वाणिज्यिक संपत्ति के मूल्यों में गिरावट ने कई क्षेत्रीय और सामुदायिक बैंकों के लिए वित्तीय जोखिम बढ़ा दिया है। खासतौर पर मूल्य खो चुकी संपत्तियों पर बकाया कर्ज का पुनर्वित्त बैंकों के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है।

**फरवरी में नाकाम हुई थी बातचीत**

वॉल स्ट्रीट जर्नल की एक रिपोर्ट के अनुसार, रिपब्लिक फर्स्ट बैंक ने पिछले वर्ष निवेशकों के एक समूह से निवेश को लेकर बातचीत शुरू की थी। लेकिन इस वर्ष फरवरी में यह बातचीत विफल हो गई थी। इसके बाद FDIC ने बैंक की संपत्तियां सीज करने और उन्हें बेचने की प्रक्रिया शुरू की थी।

ज्यादा लागत के दबाव के चलते रिपब्लिक फर्स्ट बैंक ने 2023 की शुरुआत में नौकरियों में कटौती की थी। साथ ही बैंक संपत्ति गिरवी रखकर कर्ज देने वाले कारोबार से बाहर निकल गया था। लेकिन, यह सब बैंक के संकट को दूर नहीं कर पाया।

# एनसीएस पोर्टल पर गत वित्त वर्ष में निजी सेक्टर के लिए एक करोड़ नौकरी की वेकेंसी

परिवहन विशेष न्यूज

वित्त वर्ष 2022-23 में एनसीएस पोर्टल पर 35 लाख वेकेंसी आई थी। पोर्टल के आंकड़ों के मुताबिक निजी सेक्टर में सबसे अधिक वेकेंसी वित्त एवं इंश्योरेंस सेक्टर के लिए निकल रही हैं। वित्त वर्ष 2022-23 में वित्त व इंश्योरेंस सेक्टर के लिए एनसीएस पोर्टल पर 19 .98 लाख वेकेंसी आई थी तो गत वित्त वर्ष 2023-24 में इन सेक्टर में 46 .69 लाख वेकेंसी डाली गई।

**नई दिल्ली।** सरकारी नौकरियों के लिए भले ही कम वेकेंसी निकल रही है, लेकिन निजी सेक्टर में युवाओं के लिए भरपूर अवसर दिख रहे हैं। श्रम व रोजगार मंत्रालय के नेशनल करियर सर्विस (एनसीएस) पोर्टल पर निकलने वाली वेकेंसी इस बात दर्शा रही है। मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, पिछले साल अप्रैल से लेकर इस साल 31 मार्च तक (वित्त वर्ष 2023-24) एनसीएस पोर्टल पर नौकरी प्रदाता कंपनियों की तरफ से रिकार्ड एक करोड़ नौकरियों की वेकेंसी डाली गई जो वित्त वर्ष 2022-23 की वेकेंसी के मुकाबले 214 प्रतिशत अधिक है।

वित्त वर्ष 2022-23 में एनसीएस पोर्टल पर 35 लाख वेकेंसी आई थी। पोर्टल के आंकड़ों के मुताबिक निजी सेक्टर में सबसे अधिक वेकेंसी वित्त एवं इंश्योरेंस सेक्टर के लिए निकल रही हैं। वित्त वर्ष 2022-23 में वित्त व इंश्योरेंस सेक्टर के लिए एनसीएस पोर्टल पर 19.98 लाख वेकेंसी आई थी तो गत वित्त वर्ष 2023-24 में इन सेक्टर में 46.69 लाख वेकेंसी डाली गई। मैन्यूफैक्चरिंग, शिक्षा, आईटी एवं संचार व अन्य प्रकार के प्रोफेशनल्स सेक्टर के लिए भी बड़ी संख्या में वेकेंसी आई।

आईटीआई और डिप्लोमा होल्डर्स के लिए सबसे अधिक वेकेंसी देखी गई। सरकार के एनसीएस पोर्टल पर दसवीं पास से लेकर पीएचडी डिग्रीधारक तक नौकरी के लिए अप्लाई कर सकता है। इस पोर्टल पर इस साल 31 मार्च तक 25.58 लाख नियोक्ता मौजूद थे। हालांकि इस पोर्टल पर यह डाटा उपलब्ध नहीं होता है कि रिक्त वेकेंसी में कितनी वेकेंसी भर ली गई। इस बारे में श्रम मंत्रालय के अधिकारी ने बताया कि कई बार जिन युवाओं को रोजगार मिल जाता है, वे भी अपने बायोडाटा को पोर्टल से नहीं हटाते हैं क्योंकि वे अगली अच्छी नौकरी की तलाश में रहते हैं। इसलिए नौकरी मिलने वालों की संख्या का सटीक आकलन नहीं किया जा सकता है।\\Bनौकरी खोजने व देने दोनों मामले में होगा एआई का इस्तेमाल\ Bमंत्रालय एनसीएस पोर्टल 2.0 लांच करने जा रहा है जहां नौकरी खोजने वाले और देने वाले दोनों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) व मशीन लर्निंग (एमएल) की मदद दी जाएगी।

मंत्रालय के अधिकारी के मुताबिक मान लीजिए किसी ने इलेक्ट्रिशियन की नौकरी के लिए अप्लाई किया। एआई व एमएल की मदद से वेकेंसी को देखते हुए उसे सिस्टम बताएगा कि फलां कोर्स कर लेने पर उसे और अच्छी और अधिक वेतन वाली नौकरी मिल सकती है।

वैसे ही नियोक्ता को सिस्टम उन आवेदकों के बारे में भी जानकारी देगी जिन्होंने उनकी नौकरी के लिए अप्लाई नहीं किया है। वित्त वर्ष 2023-24 में एनसीएस पोर्टल पर निकलने वाली वेकेंसी (सभी संख्या हजार में) फाइनेंस व इंश्योरेंस 4669, आपरेशंस एंड सपोर्ट 1446, सेवा सेक्टर 1070, विशेषज्ञ प्रोफेशनल्स सर्विस 154 शिक्षा, 190मैन्यूफैक्चरिंग, 689आईटी व संचार, 494 अन्य 2212।

# मार्च तिमाही में 18 प्रतिशत बढ़ा नेट प्रॉफिट, डिविडेंड का भी ऐलान

परिवहन विशेष न्यूज

प्राइवेट सेक्टर के लेंडर ICICI बैंक के नेट प्रॉफिट में सालाना आधार पर 18 .5 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही (Q4FY2024) में बैंक को 11672 करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ जो एक साल पहले 9853 करोड़ रुपये था। आईसीआईसीआई बैंक ने अच्छे रिजल्ट का तोहफा अपने निवेशकों को भी दिया है। बैंक ने हर शेयर पर 10 रुपये के डिविडेंड का एलान किया है।

**नई दिल्ली।** प्राइवेट सेक्टर के लेंडर ICICI बैंक के नेट प्रॉफिट में सालाना आधार पर 18.5 प्रतिशत का मुनाफा हुआ है। वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही (Q4FY2024) में बैंक 11,672 करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ, जो एक साल पहले 9,853 करोड़ रुपये था। वहीं, स्टैंडअलोन बेसिस पर देश के दूसरे सबसे बड़े प्राइवेट बैंक के टैक्स के बाद मुनाफे में 17.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह चौथी तिमाही में 10,708 करोड़ रुपये रहा, जो एक साल पहले 9,122 करोड़ रुपये था। बैंक की शुद्ध ब्याज आय 8.1 प्रतिशत बढ़कर 19,093 करोड़ रुपये हो गई।

आईसीआईसीआई बैंक ने अच्छे रिजल्ट का तोहफा अपने निवेशकों को भी दिया है। बैंक ने हर शेयर पर 10 रुपये के डिविडेंड का एलान किया है।

**ICICI बैंक के शेयरों का हाल**

एक दिन पहले ICICI Bank के 17,000 कस्टमर के क्रेडिट कार्ड का डेटा लीक होने की बात सामने आई थी। इसका नकारात्मक असर बैंक के शेयरों पर भी दिखा। शुक्रवार (26 अप्रैल) को बैंक के शेयर BSE पर 0.53 फीसदी गिरकर 1,107.15 रुपये के भाव पर बंद हुए। इसने पिछले एक साल में करीब 20 प्रतिशत का रिटर्न दिया है।

क्रेडिट कार्ड डेटा लीक होने के बाद ICICI Bank ने एहतियाती कदम भी उठाए। उसने सभी लीक क्रेडिट कार्ड (ICICI Bank Blocked Credit Card) को ब्लॉक कर दिया, ताकि कोई साइबर क्रिमिनल उनका दुरुपयोग ना कर सके। साथ ही, बैंक ने सभी प्रभावित ग्राहकों के लिए नया क्रेडिट कार्ड जारी करने की बात भी की है।

# मावली ,मारवाड़ की यात्री ट्रेन आखिरी सफर के साथ अपनी यादों को सहजती हुई बन्द

परिवहन विशेष न्यूज

## गार्ड, लोको पायलट का नगरवासियों ने किया सम्मान

**आमेट।** आज से लगभग 87 वर्ष पहले भाप के इंजन से छुकछुक करती प्रारंभ हुई, रेल यात्रा का शुक्रवार को आखिरी सफर के साथ अपनी यादों को सहजती हुई इतिहास के पृष्ठ पर अंकित हो गई. 1933 में हिन्दुस्थान में राजतंत्रात्मक व्यवस्था के समय उदयपुर से जोधपुर को जोड़ने के लिए मेवाड़ और मारवाड़ रियासतों ने अपने खर्चे से रियासत की जनता को आवागमन की सुविधा उपलब्ध कराने के उद्दश्य के लिए इस कठिन दुर्गम डगर पर मीटर गेज लाइन का निर्माण करवाया. अरावली की पर्तमालाये सीना तानें खड़ी थी तत्कालीन समय से लेकर आज तक यह रेल लाइन अपने निर्माण के कारण अपने आप में एक आश्चर्य व कारीगरी मिसाल है. तकनीकी और संसाधनों के बिना भी इस रेल लाइन का निर्माण कोई सरल कार्य नहीं था. मेवाड़ और मारवाड़ की संस्कृति के बीच में ज्यादातर इस लाइन में अरावली की पर्तमालाये सीना तानें खड़ी थी. रेलवे लाइन पर विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक ऐतिहासिक स्थल गोरम घाट में टनल का निर्माण किया गया. इस लाइन पर उदयपुर, जोधपुर जैसे ऐतिहासिक स्थल थे. वही नाथद्वारा, द्वारकाधीश चारभुजा मंदिर को भी जोड़ती थी. प्रसिद्ध चारभुजा जी मंदिर के वजह से ही आमेट रेलवे स्टेशन का नाम चारभुजा रोड रखा गया. रेल संचालन के बाद जब देश आजाद हुआ तो करीब 25 वर्षों के बाद बसो का संचालन होने लगा. आमेट से चारभुजाजी के दर्शनार्थ हेतु ट्रेन के समय सबसे पहले आमेट के पूंजीपति रतन लाल पूर्बिया के द्वारा एक बस का संचालन शुरू किया गया. यह बस आमेट से ट्रेन में आने वाले दर्शनार्थियों को चारभुजाजी के दर्शन करवाकर शाम तक वापस लौटती ट्रेन में सवारियों को छोड़ने के काम आती थी. जो उस समय चारभुजाजी के लिए आमेट से पहली बस सेवा थी. शाही ट्रेल के नाम से काफी लोकप्रिय थी इस ट्रेन के साथ ही रेलवे के द्वारा दो रियासतों आध्यात्मिक, ऐतिहासिक स्थलो व परम्पराओ के देश विदेस तक पहचान बनाने के लिए एक शाही रेल मीरा एक्सप्रेस का संचालन शुरू किया जो लोगो के बीच मे शाही ट्रेल के नाम से काफी लोकप्रिय थी. सप्ताह में एक दिन चलने वाली इस ट्रेन को देखने के लिए लोग खड़े रहते थे. शुक्रवार को जब यह ट्रेन अपने अंतिम सफर की ओर मावली से मारवाड़ के लिए जा रही थी तो प्रातः 10.00 बजे चारभुजा रोड रेलवे स्टेशन आमेट पँहुचने पर नगरवासियों द्वारा रेल के रेलगार्ड और लोको पायलट व समस्त रेल स्टाफ का माला और केसरिया दुपट्टा पहना कर सम्मान किया गया. उदयपुर जोधपुर और भारत के विभिन्न महानगरों तक का सफर यहीं से प्रारंभ करेंगे। 50 वर्ष से अधिक समय से स्थानिय लोगो की जो मांग थी की इस रेललाइन को भी ब्रॉड गेज रेलवे लाइन में तब्दील हो जाये. वह कार्य भी धरातल पर तेजी से बढ़ रहा. एक-दो साल बाद इसी स्टेशन पर विद्युत से चलने वाली ब्रॉड गेज का इंजन सिटी देकर हमें वापस रेलवे स्टेशन पर हमें बुलाएगा. तब फिर से उदयपुर जोधपुर और भारत के विभिन्न महानगरों तक का सफर यहीं से प्रारंभ करेंगे।

# वोट हमारा कर्त्तव्य और मौलिक अधिकार :- पण्डित शास्त्री

### तिरुपति से राजस्थान आकर पण्डित शास्त्री ने किया प्रथम बार मतदान

परिवहन विशेष न्यूज

**भीलवाड़ा।** बागोर देश भर में 2024 के भारतीय आम चुनाव 19 अप्रैल 2024 से 1 जून 2024 तक 18वीं लोकसभा के सदस्यों का चुनाव करने के लिए निर्धारित हैं। इस 18वीं लोकसभा के चुनाव 7 चरणों में सम्पन्न होंगे। उसके बाद चुनाव के नतीजे 4 जून 2024 को घोषित किए जाएंगे। इसी क्रम में 26 अप्रैल शुक्रवार को द्वितीय चरण के चुनाव सम्पन्न हुए। जिसको लेकर मतदाताओं में मतदान करने के लिए अभूतपूर्व उत्साह नजर आया। युवा मतदाता, दिव्यांग, वरिष्ठ नागरिक, महिलाओं सहित अन्य मतदाताओं ने भी बढ़चढ़ कर मतदान किया। इतना ही नहीं अपने पैतृक गांव बागोर से बाहर आंध्रप्रदेश स्थित तिरुपति में आचार्य विद्याध्यन कर रहे पण्डित युवराज योगेंद्र शास्त्री ने भी शुक्रवार को बागोर पहुँच सर्वप्रथम अपना मतदान किया। और

पण्डित शास्त्री ने कहां की वोट देना हमारा कर्त्तव्य और मौलिक अधिकार दोनों हैं। इसके लिए दूरी या बाहर होना मायने नहीं रखता हैं। क्यों कि चुनाव एक पर्व हैं जो कि देश का गर्व भी हैं। शास्त्री ने बताया कि वोट का कोई मोल नहीं होता हैं इसलिए निस्वार्थ भाव से बिना लोभ लालच के मतदान अवश्य करना चाहिए, ताकि एक बेहतरिन सरकार का चयन किया जा सके। इसलिए मतदान कर अपने मौलिक अधिकार का प्रयोग जरूर करना चाहिए।

शास्त्री के पिता विष्णु विवेक शर्मा ने जानकारी देकर बताया की पण्डित युवराज योगेंद्र शास्त्री वर्तमान में आंध्रप्रदेश स्थित तिरुपति श्री वेंकटेश्वर वैदिक यूनिवर्सिटी तिरुमाला देवस्थानम में शास्त्री की उपाधि प्राप्त कर आचार्य हेतु अध्ययनरत हैं जिसने दो दिन का अपना सफर तय कर शुक्रवार शाम बागोर पहुँच अपने मत का प्रथम बार प्रयोग किया। इसको लेकर बीएलओ गोपाल लाल ओझा ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी राजस्थान सरकार द्वारा जारी लोकसभा चुनाव 2024 का मतदाता जागरूकता प्रमाण पत्र देकर नव मतदाता के रूप में पहली बार मतदान करने पर बधाई भी दी।

## आईएफएस ऑफिसर बिनय प्रधान केंद्र मंत्री धर्मेंद्र प्रधान केलिए चुनाब प्रचार कर रहा है : सस्मित पात्र

**मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड उडीशा, भुबनेश्वर :** आईएफएस बिनय प्रधान केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान की चुनाब में मदद कर रही हैं। बिजेड़ी मुख्य निर्वाचन अधिकारी के पास शिकायत की है। विनय प्रधान वर्तमान में अमेरिका में महावाणिज्य दूत के पद पर कार्यरत हैं। महीनों से छुट्टी पर चल रहे आईएफएस बिनय प्रधान केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और बीजेपी के संबलपुर लोकसभा उम्मीदवारों के लिए प्रचार की जिम्मेदारी निभा रहे हैं ।जब धर्मेंद्र प्रधान केंद्र सरकार में पेट्रोलियम मंत्रालय में थे तो विनय उनके ओएसडी थे। इसलिए, स्वतंत्र और बंद चुनाव नहीं हो सकता। इसलिए उसकी मोबाइल ट्रैकिंग सीडी की जांच की जाए और उसे उसके कार्यस्थल पर वापस लौटाने की मांग के साथ कार्रवाई की जाए। हमने 24 अप्रैल और 26 अप्रैल को ईसीआई मेल भेजकर कार्रवाई की मांग की है और राज्य मुख्य चुनाव आयोग को भी जानकारी दी है। बीजेडी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सस्मित पात्र ने कहा कि हमने इसी साल 24 तारीख को मुख्यमंत्री चुनाव अधिकारी को मेल से शिकायत की थी ।

# स्क्रैप माफिया रवि काना और उसकी गर्लफ्रेंड को थाईलैंड से पुलिस नोएडा लायी, अब खुलेंगे पीपीपी का राज़

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** लंबे समय से फरार चल रहे स्क्रैप माफिया रवि काना को आखिरकार थाईलैंड में गिरफ्तार किया गया और उसके बाद अब नोएडा पुलिस उसे लेकर वापस नोएडा पहुँच चुकी है। रवि काना से पूछ्ताछ के लिए कोर्ट से रिमांड मांगी जाएगी। फिलहाल इस मामले में पुलिस के आला अधिकारी बोलने से बच रहे। बताया जा रहा है कि रवि काना से पुलिस को कई अहम जानकारी हाथ लगी है। जिसमें पीपीपी मॉडल का खुलासा हुआ। पीपीपी मॉडल अब वो मॉडल मत समझिएगा पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप। बल्कि पॉलिटिशियन, पुलिस और प्रेस के संरक्षण में ही रवि काना एक छोटे से व्यक्ति से माफिया बन गया। चर्चाएं है कि रवि काना शुरुआत में अलग अलग बिल्डरों की साइट से सरिया चोरी कराता था। उसका नाम ऐसे मामलों में सामने भी आया था। उसके बाद रवि काना ने स्क्रैप ठेकेदारी की दुनिया में कदम रख दिया। भले ही कबाड़ी का काम कर रहा था लेकिन चोरी में भी माहिर था। इसी दौरान जिले में उसे एक बड़े पुलिस अधिकारी का संरक्षण प्राप्त हो गया। देखते ही देखते नेता भी उसके साथ जुड़ गए। ये सब देख कुछ प्रेस वाले भी रवि काना को संरक्षण देने लगे। अब तो रवि काना ने जिले में स्क्रैप ठेकेदारी में एक छत्र राज़ शुरू कर दिया। यदि कोई स्क्रैप ठेकेदार कहीं से स्क्रैप लेना चाहता तो उसके ट्रकों को अपने गुंडों और पुलिस की मदद से तुरंत बंद करा देता थे।

पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह ने कार्यभार सम्भाला तो उनके सामने ऐसी कई चुनौती थी जिससे पुलिस की बदनामी हो रही थी। लोगों में विश्वास और व्यापारियों में सुरक्षा का माहौल देने की लक्ष्मी सिंह ने ठान ली। इसी दौरान उन्हें पता चल गया कि रवि काना है जो स्क्रैप माफिया है और दूसरे लोगों को काम भी नहीं करने देता, लेकिन कोई सबूत नहीं था। सेक्टर 39 थाने में अचानक रवि के खिलाफ़ एक महिला ने गैंगरेप की शिकायत पुलिस ने तत्काल मामले की जांच कर सही पाते हुए रिपोर्ट दर्ज की है। इसके बाद रवि काना की उल्टी गिनती शुरू हो गई। पुलिस कमिश्नर की ईमानदारी और कर्तव्य निष्ठा के आगे सब कुछ धवस्त होता दिख रहा है। बता दें कि रवि की पत्नी को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी थी। लेकिन रवि और उसकी गर्लफ्रेंड काजल फरार चल रहे थे। अचानक फिर पता चला थाईलैंड में दोनों गिरफ्तार हुए हैं। भारत और थाईलैंड समझौते के अनुसार नोएडा पुलिस थाईलैंड पहुंची और दोनों को लेकर आ गए। अब यही चर्चा है कि रवि काना से मिली डायरी पर लिखे नाम सार्वजनिक होंगे। इसमें नेता पुलिस अधिकारी और पत्रकारों के नाम शामिल है। सभी के इस वक्त होश उड़े हैं और अपने अपने हिसाब से अपने नाम बचाने के लिए सांठगांठ की जा रही है ।

# उम्र नही इच्छा सबसे ऊपर सिद्ध कर दिखाया एलेजांद्रा मारिसा रोड्रिग्ज ने मिस यूनिवर्स ब्यूनस आयर्स का खिताब जीत कर

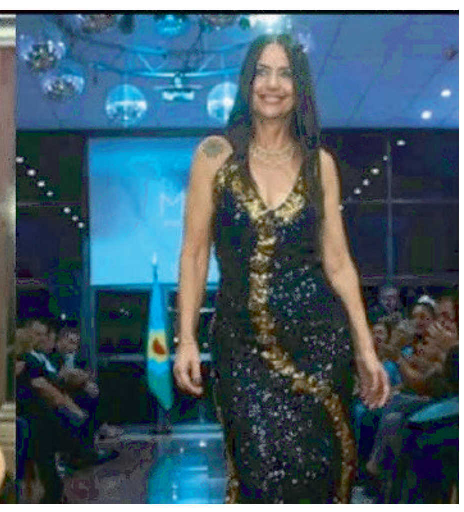

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** 60 वर्षीय एलेजांद्रा मारिसा रोड्रिग्ज अर्जेंटीना के ब्यूनस आयर्स प्रांत की राजधानी ला प्लाटा की एक वकील और पत्रकार हैं. उन्होंने मिस यूनिवर्स ब्यूनस आयर्स 2024 का खिताब अपने नाम कर लिया है. उम्र और सुंदरता के बारे में रूढ़िवादिता को तोड़ते हुए उनकी जीत ने दुनिया भर के लोगों को प्रेरित किया है. रोड्रिग्ज की जीत एक ऐतिहासिक क्षण है, क्योंकि वह इस तरह की प्रतिष्ठित सौंदर्य प्रतियोगिता जीतने वाली अपनी उम्र की पहली महिला बन गई हैं. उनकी मनमोहक मुस्कान और शालीन व्यवहार ने जजों और दर्शकों का दिल जीत लिया. एक्स पर शेयर किए गए वीडियो के अनुसार, इस जीत के साथ रोड्रिग्ज मई 2024 में होने वाले मिस यूनिवर्स अर्जेंटीना के राष्ट्रीय चयन में ब्यूनस आयर्स का प्रतिनिधित्व करने के लिए तैयार है. वह मिस यूनिवर्स वर्ल्ड प्रतियोगिता में प्रतिस्पर्धा करने के लिए गर्व से अर्जेंटीना का झंडा ले जाएंगी, जो 28 सितंबर, 2024 को मेक्सिको में होने वाला है। रोड्रिग्ज की यात्रा सुंदरता के पारंपरिक मानकों को चुनौती देती है और सामाजिक मानदंडों को चुनौती देती है. उनकी कामयाबी यह दर्शाती है कि आत्मविश्वास, एलिगेंस और आकर्षण उम्र की बाधाओं को पार करता है. गौरतलब है कि पहले इस प्रतियोगिता में सिर्फ 18 से 28 साल की महिलाएं ही हिस्सा ले सकती थीं, लेकिन सितंबर 2023 में मिस यूनिवर्स ऑर्गेनाइजेशन ने इन प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने की आयु सीमा को हटा दिया था।

# सीबीआई जांच में संदेशखाली में ई-रिक्शा चालक के घर से मिले विदेशी हथियार

परिवहन विशेष न्यूज

**कोलकाता।** उत्तर 24 परगना का संदेशखाली एक बार फिर सुर्खियों में, यह वही संदेशखाली है जहां पर 5 जनवरी को राशन घोटाला मामले में छापा मारने पहुंची ईडी की टीम पर जानलेवा हमला किया गया था। जहां सालों से यौन उत्पीड़न का शिकार महिलाएं सड़कों पर लाठी, डंडे और झाड़ू लेकर निकल आईं थीं। यही संदेशखाली फिर सुर्खियों में आ गया है इस बार संदेशखाली के सरबेड़िया इलाके में अबू तालिब नामक एक इंसान के घर से हथियारों का जखीरा बरामद हुआ है। ईडी पर हमले की घटना की जांच कर रही सीबीआई संदेशखाली इलाके में पिछले कुछ दिनों से सक्रिय थी इस दौरान सीबीआई कई जगहों पर छापेमारी भी कर चुकी थी। आज सीबीआई को अपने सूत्रों से जानकारी मिली कि सरबेड़िया के उस घर में कुछ दस्तावेज और बम छुपे हो सकते हैं। सीबीआई की टीम वहां पहुंची और छापेमारी शुरू की। अधिकारियों के होश उड़ गए जब उन्होंने देखा की जमीन के नीचे एक छोटी सी जगह बनाकर उसमें हथियार छुपाकर रखे गए हैं। इसके बाद सीबीआई की टीम ने वहां पर एनएसजी को बुलाया. एनएसजी की टीम अपने अत्याधुनिक उपकरणों के साथ वहां पहुंची। एनएसजी ने अपने एक कैमरा युक्त रोबोट को जोड़ा. रोबोट रोबॉट मकान के अंदर गया और काफी देर तक अंदर ही रहा. तब तक एनएसजी के अधिकारी बाहर से मॉनिटर करके रोबोट को संचालित कर रहे थे. कुछ ही देर में ये रोबोट एक झोला लेकर बाहर आया. जिसके बाद एनएसजी की टीम ने एक जगह रेत के बोरे डालकर उस जगह को तैयार किया और वहीं पर रोबोट के जरिये ये झोला लाकर रखा. इसके बाद एनएसजी का बम निरोधक दस्ता, वहां पहुंचा और एक एक कर सभी बमों को निष्क्रिय किया. सीबीआई ने रेड के दौरान 4 विदेशी पिस्टल, एक इंडियन रिवॉल्वर, एक पुलिस की कोल्ट रिवॉल्वर, एक देशी पिस्टल यानी 7 असलहों के साथ 348 कारतूस मिले. जिसमें 9 mm के 120, .45 कैलिबर के 50 कारतूस, .38 के 50 कारतूस और .32 के 8 कारतूस बरामद किए गए. सीबीआई को यहां से शेख शाहजहां के कई परिचय पत्र भी मिले हैं जिसमें वोटर कार्ड, हथियारों का लाइसेंस, आधार कार्ड शामिल हैं।

# निजी विश्वविद्यालय की बस पलटी, तीन छात्राओं समेत 13 विद्यार्थी घायल, 11 को उपचार के बाद छुट्टी

बस पलटने ही मौके पर चीख पुकार मच गई। आसपास के लोगों ने बस के आपात द्वार से फंसे छात्रों को बाहर निकाला।

**ग्रेटर नोएडा।** थाना बीटा-टू थाना क्षेत्र में शनिवार की दोपहर एक निजी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की बस मित्रा गोलचक्कर के पास अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में तीन छात्राओं समेत 13 विद्यार्थी घायल हो गए। सभी को पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां से उपचार के बाद 11 को छुट्टी दे दी गई जबकि दो अभी भी भर्ती हैं। पुलिस ने बस को कब्जे में ले लिया है। वहीं हादसे के बाद चालक फरार हो गया है।

पुलिस के मुताबिक शनिवार दोपहर करीब 2 बजे गलगोटिया विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएं अपनी कक्षाएं पूरी कर बस में सवार होकर परी चौक की ओर आ रहे थे। बस में करीब 35 छात्र-छात्राएं सवार थे। मित्रा चौक पर तेज रफ्तार बस ने नियंत्रण खो दिया। बस पास के ही फुटपाथ की ओर पलट गई। बस पलटने ही मौके पर चीख पुकार मच गई। आसपास के लोगों ने बस के आपात द्वार से फंसे छात्रों को बाहर निकाला। मौके पर पुलिस भी पहुंच गई। घायल छात्रों में अवधेश, मधुर, प्रकाश, विपुल, अर्जुन, नरेश, आशीष, मुस्कान, तनीषा, सामिया परवीन, प्रियांशु और रोहन शामिल हैं। बाद में क्षतिग्रस्त बस को पुलिस थाना बीटा-2 परिसर में ले आई। निजी अस्पताल के डॉ. मुकेश कुमार ने बताया कि घायलों में कोई भी छात्र गंभीर नहीं है।

### ड्राइवर की लापरवाही से हुआ हादसा

घायल छात्रों ने ड्राइवर की लापरवाही से हादसा होने की बात कही है। छात्रों का आरोप है कि ड्राइवर लापरवाही से बस चला रहा था। कुछ छात्रों ने उसको इस बात के लिए टोका भी। लेकिन उसने छात्रों की टोकाटाकी को नजरअंदाज कर दिया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023